सत्यमेव जयते

अमृत

लोकहितार्थ, सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अमृत अंक-29 का विमोचन

महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय, तमिलनाडु
361, अन्ना सलाई, तेयनाम्पेट, चेन्नई- 600018
अंक-30 वाँ, सितंबर-2021

23 मार्च 2021 को आयोजित हिंदी कार्यशाला को प्रोत्साहित करते हुए व. उपमहालेखाकार महोदय (प्र)

हिंदी कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्री एम. सुधाकरन, व. लेखाधिकारी

वदंना

भावों के मधु सुमन मात तेरे श्री चरणों में धर दूँ

ऐसा वर दो हे वरदायिनी मानव में नव रव भर दूँ

अमृत परिवार

प्रकाशन
अमृत
(विभागीय हिंदी पत्रिका)

संरक्षक
श्री डी. जयशंकर, महालेखाकार
(लेखा व हक)

प्रकाशक
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
तमिलनाडु, चेन्नई-600018

प्रधान संपादक
श्री एन. दिनकरन
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

अंक
30 वाँ

निर्देशन
श्री एम. सुधाकरन
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)

प्रतियाँ
100

संपादक
श्री सुभाष चंद यादव
हिंदी अधिकारी

मूल्य
राजभाषा के प्रति निष्ठा

हिंदी परिवार

सुश्री बी. जुलियट विमला
सहायक लेखा अधिकारी

श्री संजय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

मुद्रक
जया ग्रॉफिक्स, चेन्नई

टिप्पणी

इस अंक में रचयिताओं द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों व लेखन की मौलिकता से संबंधित पूर्ण जिम्मेदारी रचनाकार की स्वयं की है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायिक क्षेत्र चेन्नई रहेगा।

सत्यमेव जयते

संदेश

महालेखाकार की कलम से....

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका अमृत का 30 वां अंक आपके कर कमलों में देखकर मन प्रसन्न हो रहा है। हमारा प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिन्दी का कार्यालयीन उपयोग बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग के कार्यक्रम अनुसार निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करना और उसे कायम रखना है। हिंदी में लक्ष्य अनुसार काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है, अमृत पत्रिका उसी दायित्व की पूर्ति का एक हिस्सा है, साथ ही यह कार्मिकों में भाषायी बंधुत्व बढ़ाने का साधन है। राजभाषा और संवैधानिक मूल्यों के प्रति निष्ठा दर्शाते हुए जिन रचनाकारों ने अपना योगदान दिया है उन्हें मैं बधाई देता हूँ।

इस पत्रिका का निरंतर सफल प्रकाशन हमारे अनुशासित प्रयासों का परिणाम है, इसके लिए मैं संपादक मंडल को भी बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

(डी. जयशंकर)

महालेखाकार (ले व ह)

चेन्नई

14.09.2021

सत्यमेव जयते

प्रधान संपादक की और से...

यह जानकर मैं प्रफुल्लित हूँ कि मेरा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में लगातार 30 अंको से हिंदी पत्रिका "अमृत" का प्रकाशन कर रहा है। इसके अलावा यहाँ चल रही हिंदी वार्तालाप कक्षाएँ 'हिन्दी वार्ता' को बढ़ावा देने वाली पहल है। बहुत से कार्मिक राजभाषा विभाग से आयोजित हिंदी परीक्षाएँ प्राज्ञ आदि भी निरंतर उत्तीर्ण कर रहे हैं जो हिंदी के माहौल के लिए एक शुभ संकेत है। हिंदी भाषी हो चाहे अहिंदी भाषाभाषी, सभी कार्मिक यहाँ हिंदी पखवाड़े की गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भागीदारी करते हैं जो राजभाषा के लिए निर्धारित संवैधानिक मूल्यों का पालन करने के प्रति हमारा विनीत प्रयास है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के रचनाकारों के आलेखों की सराहना करता हूँ और हिंदी प्रयोग को प्रोत्साहित करने में कार्यालय के हिंदी अनुभाग के तत्पर प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ। अंत में सभी पाठकों और रचनाकारों को बधाई।

(एन. दिनकरन)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

चेन्नई

14.09.2021

संपादक की कलम से...

कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'अमृत' का 30 वाँ अंक बड़ा ही सुंदर बन पड़ा है जो भाषाई बंधुत्व का प्रेरक प्रतीत होता है। जिस प्रकार से भारत में संस्कृति अनेकता में एकता का निरूपण करती है ठीक उसी प्रकार भाषा भी देश को एकरूपता में पिरोने की सामर्थ्य रखती है लेकिन जब किसी देश में बहुभाषी समाज हो तो वह समस्या न होकर एक अनोखा और मनमोहक दृश्य उत्पन्न करता है। हमें इसमें छुपे गौरव की अनुभूति तलाशने की जरूरत है, जैसे ही अनुभूति सम्पन्न होती है चारों तरफ एक चिरसौंदर्य दृष्टिगत होता है। देश में 22 भाषाओं की आधिकारिक पुष्टि है या यूँ कहें कि संवैधानिक मान्यता है जो हमारे नीति निर्माताओं द्वारा यहाँ के भाषाई सौंदर्य की अभिव्यक्ति का ही विनीत प्रयास जान पड़ता है और यह भी एक कारण है कि इस अभिव्यक्ति का हमें जीवन मूल्य की तरह सम्मान करना होगा। यही वह बिन्दु है जहाँ से हमारी समग्र उन्नति का द्वार खुलेगा। सभी भाषाओं का अपना एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य है। इनमें शाब्दिक और अक्षर संबंधित वैज्ञानिकता है जो हमारे पूर्वजों के समृद्ध ध्वनि-ज्ञान की उन्नत दशा का प्रमाण है। भारत भूमि की सभी भाषाएँ हमारा गौरव हैं और ईश-तुल्य है क्योंकि भाषा को हमारे पूर्वजों और हमारे शास्त्र ने मानव को उसकी अभिव्यक्ति के साधन के रूप प्राप्त हुआ 'ईश्वर का उपहार' बताया है और उन भाषाओं में से हिंदी भी एक है। उक्त के आलोक में यह सिद्ध होता है कि व्यक्ति द्वारा अनेक भाषाएँ सीखना ईश्वर के उपहार का अमृतपान करने जैसा है और हमारी 'अमृत' पत्रिका उसी अमृतपान का एक विनम्र प्रयास है।

आशा है हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी रचनाकर्म करके और दैनिक कार्यों में यथासंभव हिंदी का प्रयोग करके हिंदी को आप अपना अमूल्य योगदान सदैव देते रहेंगे। आभार सहित।

भवदीय

(सुभाष चंद यादव)
हिन्दी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचनाएँ	रचनाकार का नाम (श्री/सुश्री)	पृष्ठ सं.
1	'कोरोना को यूँ हराना है'	एन. दिनकरन, व. उपमहालेखाकार (प्र)	7
2	'तमिलनाडु' एक परिचय	शशिकांत कुमार, डी.ई.ओ, ग्रेड बी	8
3	वाह, वे भी क्या दिन थे!	आर. विश्वनाथन, व. लेखा अधिकारी	11
4	कोरोना के दौरान हुए कटु अनुभव	दंडु रवींद्रा रेड्डी, लेखाकार	13
5	'रामचरितमानस की लोकप्रिय चौपाइयाँ'	सुभाष चंद, हिन्दी अधिकारी	15
6	'जल ही जीवन'	मंजू मोनिषा डी.	22
7	मेरा दामाद मेरा भगवान	संजय कुमार सिंह, क. अनुवादक	23
8	वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयकर व अन्य लाभ	वे. राजू, स. लेखा अधिकारी	30
9	हमारे कार्यालय में हिंदी की भूमिका	एम. रामास्वामी, स. लेखा अधिकारी	32
10	नई दुनिया की सैर	विद्या जनार्दन, स. लेखा अधिकारी	33
11	कूप-मंडूक	ई. के. नटराजन, स. लेखा अधिकारी	36
12	हमारा गौरव	बी. जूलियट विमला, स. लेखा अधिकारी	38
13	बच्चे बनकर काटें 'लॉक-डाउन'	मीना पूनम ज्योति, व. लेखा अधिकारी	40
14	सिनेमा और समाज	मोहम्मद हबीब नवाज, लिपिक	42
15	'सोच बदलो हालात बदलेगी'	एम. रामास्वामी, स. लेखा अधिकारी	43
16	गाँव की कहानी	राजीव कुमार, डी.ई.ओ	44
17	'अबके जन्म मोही फिर तू ही मिलियो'	एस कल्याणी, व. लेखा अधिकारी	45
18	कुछ शायरी, कुछ नज्में	संजय कुमार सिंह, क. अनुवादक	46
19	'आतंक का साया'	टी.एन. तिरुपुरसुंदरी, स. लेखा अधिकारी	48
20	'अमन की ताकत'	लक्ष्मी जी, स. लेखा अधिकारी	48
21	ऑलंपिक्स की खुशियाँ	कल्याणी पल्लवेश, स. लेखा अधिकारी	49
22	फटकार	के. संकरन, स. लेखा अधिकारी	50
23	महामारी	अनिल कुमार, डी.ई.ओ	50
24	स्वास्थ्य ही धन	आर. शांति, व. लेखा अधिकारी	51
25	आपके अभिमत	हिंदी अनुभाग	52

'कोरोना को यूँ हराना है'

एन. दिनकरन, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

हराना है, हाँ हराना है
कोरोना को हमें हराना है
हारेगा निश्चित ये कैसे?
सावधानी बरतिए ऐसे।

हल्की फुल्की कसरत करिए
न्यूनतम संपर्क रखिए
मिलना हो तो मास्क लगा के
मास्क से मुँह-नाक ढक के।

भीड़-भाड़ से बिल्कुल बचिए
घर पर बैठ सुरक्षित रहिए
साबुन से नित हाथ धोइए
तीस सेकंड ठीक से मलिए।

बाहर सैर-सपाट न जाएँ
टीकाकरण जल्दी करवाएँ
सेहत भरी खुराक खाएँ
सेनीटाइज को मित्र बनाएँ।

सरकार पर भरोसा करिए
बनाए गए नियम अपनाइए
अफ़वाओं को दूर भगाइए
सबको इसके लाभ बताइए।

हाथ मिलाने से बचिए
हाथ जोड़ अभिवादन करिए
हराना है, हाँ हराना है
कोरोना को यूँ हराना है।

'तमिलनाडु' एक परिचय

शशिकांत कुमार, डी.ई.ओ, ग्रेड बी

तमिलनाडु भारत के दक्षिण में बसा राज्य है जिसकी राजधानी चेन्नई है। यहाँ अनेक नगर हैं जिनमें से ऐतिहासिकता की दृष्टि से मदुरै, त्रिचि (तिरुचिरापल्ली), कोयम्बटूर, सेलम, तिरुनवेली आदि प्रसिद्ध हैं। इसके पड़ोसी राज्य आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और केरल हैं। वर्तमान में यहाँ के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन और राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित हैं। 2011 की जनगणना अनुसार यहाँ की जनसंख्या 72147030 एवं घनत्व 444/किमी है। इसका क्षेत्रफल 130048 वर्गकिमी और जिलों की संख्या 32 है। यहाँ बोली जाने वाली प्रमुख भाषा तमिल है। इसका गठन 26 जनवरी 1940 को हुआ था। यहाँ विधानसभा में 235 सीटें, राज्यसभा के लिए 18 व लोकसभा की 39 सीटें हैं। इसका उच्च न्यायालय मद्रास उच्च न्यायालय है। ब्रिटिश शासनकाल में यह प्रांत मद्रास प्रेसिडेंसी का भाग था। स्वतंत्रता के बाद मद्रास प्रेसिडेंसी को विभिन्न भागों में बाँट दिया गया जिसका परिणीति मद्रास तथा अन्य राज्यों के रूप में हुई। 1968 में मद्रास प्रान्त का नाम बदलकर तमिलनाडु कर दिया गया था।

तमिलनाडु शब्द तमिल भाषा के तमिल तथा नाडु से मिलकर बना है जिसमें नाडु यानी भू भाग है अर्थात तमिलों का घर या तमिलों का वास स्थल। तमिलों का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह उन गिने चुने क्षेत्रों में से एक है जो प्रागैतिहासिक काल से अब तक लगातार विद्यमान है। अत्यारंभ से यह तीन प्रसिद्ध राजवंशों की कर्मभूमि रही हैः चेर, चोल तथा पांड्य। संगम काल के तीन वंश (चेर, चोल एवं पांड्य) की जानकारी इंडिका (मेगस्थनीज), अष्ठाध्यायी (पाणिनी), ऐतरेय (ब्राह्मण ग्रंथ) आदि पुस्तकों में मिलती है। चेर वंश का शासक उदयिन जरेल था, कहा जाता है उसने महाभारत के योद्धाओं को भोजन कराया था। लोक प्रसिद्ध है कि चेरवंश के आदिगमन ने आर्यवृत में सर्वप्रथम गन्ने की खेती आरंभ करवाई थी।

पाण्ड्य और चोलवंश -

पाण्ड्यों की राजधानी मदुरै थी जिसे त्यौहारों का शहर कहा जाता था। इस वंश का चिन्ह मछली था। इस वेश के नाड्यार शासक ने समुद्र की पूजा आरंभ करवाई थी जो प्राकृतिक शक्तियों की देवता के रूप में उपासना का संकेत है। चोलों की राजधानी उरैकर थी। इस वंश के राज्य शासन के दौरान सूती वस्त्र का व्यापार चरम पर था, इसकी सेना भी मजबूत थी। इस वंश के शासक राजराज ने 10,000 कारीगर श्रीलंका से बुलाकर एक बड़ा बाँध बनवाया था। यह बाँध कृषि के लिए बनवाया गया था। इस वंश का शासक राजेंद्र हिंदू धर्म को मानता था।

मंदिर निर्माण-

580 ईस्वी के आसपास पांड्य शासक जो मंदिर निर्माण में कुशल थे उन्होंने वंश ने लगभग 150 वर्षों तक शासन किया। काँचीपुरम उनका प्रमुख केंद्र था। द्रविड़ स्थापत्य इस समय अपने चरम पर था। चोलों ने मंदिर निर्माण में प्रवीणता हासिल की। तंजावुर का वृहदेश्वर मंदिर और मदुरै का मीनाक्षी अम्मन मंदिर इसका अनुपम उदाहरण हैं। सोलहवीं सदी के मध्य में विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद कुछ पुराने मंदिरों का पुनर्निमाण किया गया। यहाँ के मंदिरों में मुख्य द्वार एवं बाहरी द्वार होता है। मंदिरों के आसपास जलाशय भी होता है। यहाँ के मंदिरों में परिक्रमा करने के लिए बाहर जगह भी होती है। यहाँ के प्रमुख मंदिरों के नाम कुछ इस प्रकार है: श्री आगास्थेश्वर मंदिर- कोलपक्कम, कपालेश्वर मंदिर, जंबुकेश्वर मंदिर, शिव सुब्रमणियम स्वामी मंदिर, रंगनाथस्वामी मंदिर, रामानाथस्वामी मंदिर, बालामुरुगन मंदिर एवं मीनाक्षी अम्मन मंदिर। मीनाक्षी मंदिर वस्तुतः माता पार्वती जी का है जो मदुरै में है। मीनाक्षी मंदिर भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित है। कहते हैं कि मीनाक्षी माता पार्वती का अवतार है और वह भगवान विष्णु जी की बहन मानी जाती है। इस मंदिर का वर्तमान निर्माण 17वीं शताब्दी में किया गया था।

भौगोलिक विवरण- तमिलनाडु का क्षेत्रफल 130048 वर्गकिमी है। यह भारत के दक्षिण में स्थित है। तमिलनाडु के दक्षिण में हिंद महासागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। इसके अतिरिक्त राज्य के उत्तरपूर्व में पुडुचेरी भी स्थित है। यहाँ की प्रमुख नदी कावेरी है। तमिलनाडू का पश्चिमी, दक्षिणी और उत्तरपूर्वी भाग पहाड़ी है। तमिलनाडु देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जिसकी सीमा के भीतर पूर्वी और पश्चिमी घाट पड़ते हैं जो नीलगिरी में जुड़े हैं। केरल की सीमा से लगता पश्चिमी घाट है जो दक्षिण पश्चिम मानसून की बारिश को रोक देता है जिससे इधर बारिश का औसत सदैव असुंतुलित रहता है। राज्य का पूर्वी भाग उपजाऊ है उत्तरी भाग में पहाड़ियाँ और समतल भूमि है। राज्य का मध्य भाग शुष्क है जहाँ अन्य क्षेत्रों की तुलना में कम वर्षा होती है। इसकी तटरेखा 910 किमी है। वर्ष 2004 में आई सुनामी की लहरें इस राज्य की तटरेखा से भी टकराईं थी जिसके कारण यहाँ बहुत क्षति हुई। इस सुनामी में तमिलनाडु में लगभग 7790 लोग मारे गए थे। इस राज्य की जलवायु मानसून पर निर्भर है और बहुत से क्षेत्र सूखा संभावित है।

नृत्य- भरतनाट्यम यहाँ का बहुत लोकप्रिय और प्रसिद्ध नृत्य है।

भोजन- चावल तमिलनाडु का प्रमुख भोजन है। यहाँ चावल के बने व्यंजन जैसे डोसा, उथपम, ईडली आदि काफी लोकप्रिय है। यहाँ के भोजन में खीर जैसा दिखाई देने वाला भोजन दही चावल (कर्ड राईस) नमकीन होता है और सेहत के लिए अच्छा होता है। यहाँ खाना केले के पत्ते पर परोसा जाता है। यहाँ खाने में मिर्च मसालों का काफी प्रयोग किया जाता है जिससे भोजन अति स्वादिष्ट एवं रूचिकर लगता है। यहाँ खाना खाने के बाद मोर यानी मट्ठा दिया जाता है जिससे पेट ठंडा रहता है जो स्वास्थ्यवर्धक है क्योंकि यहाँ गर्मी की वजह से यह पेट को ठंडा रखता है।

तमिलनाडु की अर्थव्यवस्था- तमिलनाडु भारत का महाराष्ट्र के बाद सबसे बड़ा औद्योगिक राज्य है। यह भारत का सर्वाधिक नगरों वाला राज्य है। यहाँ की 49% जनसंख्या नगरों में निवास करती है। देश के अन्य राज्यों की तुलना में औद्योगिक उत्पादन क्षेत्र समान रुप से फैला हुआ है। तमिलनाडु कर्नाटक के बाद देश का सबसे बड़ा सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) विकास का क्षेत्र है। विशेषकर चेन्नई जो कर्नाटक की राजधानी बंगलौर के बाद देश का सबसे बड़ा आईटी नगर है और देश का सबसे बड़ा आईटी पार्क यहाँ स्थित है। इसके अतिरिक्त यहाँ बायोप्रौद्योगिकी विकास (चेन्नई और मदुरई), लौह धातु विज्ञान (सालेम), परमाणु उर्जा (कलपक्कम और कुण्डकुलम) के भी केन्द्र है। यहाँ यान्त्रिक अभिव्यक्ति केंद्र भी हैं और देश के 400% वाहन यहाँ निर्मित होते हैं। इसके अतिरिक्त वस्त्र उद्योग भी यहाँ का एक पारंपरिक रुप से प्रमुख उद्योग और इसका केंद्र तिरुपुर में है।

तमिलनाडु की कृषि- राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषिक्षेत्र की प्रमुख भूमिका है। तमिलनाडू का चावल उत्पादन में देश में पाँचवा स्थान है। इस राज्य में भारत के कुल फल उत्पादन का 10% और सब्जियों के उत्पादन का 60% पैदा होता है। यहाँ स्थित कावेरी नदी द्रोणी को दक्षिण भारत का चावल का कटोरा कहा जाता है। तमिलनाडु केलों और फूलों का सबसे बड़ा और आम, रबड़, मूँगफली, नारियल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। गन्ना उत्पादन के लिए राज्य की 20% जुती हुई भूमि उपयोग में है।

संस्कृति-

तमिलनाडु की संस्कृति पूरे भारत में एक अलग पहचान बनाती है जो की एक अद्भूत बात है। तमिल सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। तमिल शहर की आधिकारिक भाषा है और हाल ही में इसे जनक भाषा का दर्जा दिया गया है। तमिल भाषा का इतिहास काफी प्राचीन है जिसका लोक रूप आम बोलचाल में प्रयुक्त होता है। यहाँ के ग्राम अंचल में जल्लीकट्ट खेल लोकप्रिय है जिसमें साँड को काबू में करने का प्रयास किया जाता है और हर वर्ष इस खेल में अनेक खिलाड़ी व दर्शक घायल तो कुछ काल कलवित भी हो जाते हैं।

वाह, वे भी क्या दिन थे!

आर. विश्वनाथन, व. लेखा अधिकारी

मैं इस कार्यालय में सन् 1985 में शामिल हुआ। एक तो नौकरी मिलना और वो भी अपने ही शहर में, बड़े सौभाग्य की बात थी। बस देखते ही देखते साल दर साल गुजरते रहे और गुजरते गुजरते उस मुकाम पर वक्त को ला ठहराया जहां दफ्तर चालू रहता है और मुलाजिम का वक्त ठहर जाता है अर्थात अगले साल में सेवा-निवृत्त हो जाऊँगा। फिर एक बार मुड़ कर देख रहा हूँ, बस यादे ही यादे दिखाई देती हैं.... अच्छी पुरानी यादें.. उन सब में खास हैं हिन्दी की यादें।

पिताजी फौज में होने के कारण और केन्द्रीय विद्यालय का विद्यार्थी होने के कारण बचपन से ही मुझे हिंदी भाषा के प्रति प्रेम था। इस दफ्तर में आने के कुछ ही दिनों बाद एक वरिष्ठ अधिकारी द्वारा हिंदी प्रेमी मण्डल से परिचित करवाया गया। वहाँ महीने में एक बार हिंदी संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया जाता था। न बैंड ना बाजा सिर्फ गीत, यदि आपको गाने की ताल है तो वे संगीत थे नहीं तो गीत तो थे ही थे। जो भी था पर लगता बहुत अच्छा था। फिर गाने से हमारे छोटे-छोटे कदम बढ़े नाटकों की तरफ, वाह!

वे भी क्या थे। कितने अच्छे-अच्छे छोटे-छोटे नाटक होते थे। सामाजिक, सामूहिक, देशभक्ति सभी विषयों पर हम लिखा करते थे। मेरा सबसे यादगार नाटक कारगिल के बारे में था, शीर्षक था- 'ये दिल माँगे मोर'। आज तक उसकी यादें मेरा मन में ताजा हैं। ये सभी को इतना पसंद आया था कि हमने इस नाटक को ऑल इंडिया रेडियो में दुबारा मंचित किया था। मैंने ऐसी अनेक अंतर कार्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लिया और पुरस्कार भी प्राप्त किए पर

ये दिल माँगे मोर' सदा याद रहेगा। भाषण प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता रेलवे कार्यालय में, ओएनजीसी में, आयकर विभाग में भी कई पुरस्कार प्राप्त किए।

जब मैं इस कार्यालय मे भर्ती हुआ तब सितंबर 14 को हिंदी दिवस मनाया जाता था, फिर वह हिंदी सप्ताह में बदला और अंत में वह हिंदी पखवाड़ा हो गया। यही हिंदी की प्रगति है। हमारे इस कार्यालय में हिंदी सप्ताह और हिंदी पखवाड़ा के समय त्योहार का माहोल होता है। रंगोली से शुरु होकर अंत में नाच गाने तक बस रंगीला ही रंगीला होता है। सभी कर्मचारी उत्साह के साथ अनेक प्रतियोगिताओं मे भाग लेते है और पुरस्कार जीतते हैं। आज भी मेरे घर में ऐसे कई यादगार पुरस्कार है जो मुझे हमेशा हिंदी समारोहों की याद दिलाते हैं। हिंदी के माध्यम से मैंने कितने अच्छे-अच्छे पल बिताए, कितने ही अच्छे-अच्छे दोस्त पाए। अपने कार्यालय में ही नहीं, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दूसरे कार्यालय जैसे दक्षिण रेलवे, आयकर कार्यालय, ओएनजीसी में भी अपने कार्यालय का नाम रोशन किया।

मेरा यह सौभाग्य था कि प्रतियोगिताओं में मिली अनवरत जीत ने मुझे प्रतियोगी से क्विज-मास्टर बना दिया। पिछले 15 साल से मैं हिन्दी पखवाड़ा में क्विज स्पर्धा चला रहा हूँ और इस प्रकार चला रहा हूँ कि यह कार्यक्रम सभी कर्मचारियों का मनपसंद कार्यक्रम बन गया है। इस महामारी कोरोना के कारण पिछले वर्ष में इस हिंदी पखवाड़ा नामक त्योहार का रंग कुछ हल्का हो गया था, आशा है इस वर्ष हम हिंदी पखवाड़ा घूमधाम से मनायेंगे। इस कार्यालय की मीठी-मीठी यादें को लिखतें जाओ लिखतें जाओ, बस लिखतें रहेंगे और सेवानिवृति के बाद याद आएंगे- वाह, वे भी क्या दिन थे!

कोरोना के दौरान हुए कटु अनुभव

दंडु रवींद्रा रेड्डी, लेखाकार

कोरोना ने हमारे जीवन को कैसे बदला है मैं आपको यह किस्सा बयान करता हूँ। मैं जो घटना बताने जा रहा हूँ वह मेरे साथ कोविड की पहली लहर के दौरान घटी। एक दिन मुझे बुखार हो रहा था। मैंने सुबह एक गोली ली। एक घंटे के बाद पसीना आया और बुखार उतर गया। मुझे फिर से शाम के समय बुखार था। मैंने फिर से गोलियाँ ली। मुझे उस समय तक लग रहा था कि यह साधारण सा बुखार है। शनिवार की शाम को मेरे दोस्तों ने आंध्र प्रदेश की एक विशेष सब्जी बनाई थी। मेरे सारे दोस्तों ने आनंद लेकर इसे खाया था लेकिन पता नहीं क्यों मुझे भोजन में स्वाद नहीं आ रहा था। मुझे तीखी सब्जी मीठी लग रही थी। जैसा कि समय चल रहा है मेरे दोस्तों ने आशंका जताई कि कहीं मुझे कोरोना तो नहीं हो गया। मैं बहुत भयभीत हो गया।

उस रात को हम सारे दोस्त सैर के लिए निकले थे। रास्ते में बड़ा नाला आया। मेरे दोस्तों को नाले में से असहनीय बदबू आ रही थी। हांलाकि मुझे कोई बदबू नहीं आयी लेकिन मैंने दिखावा किया की मुझे बहुत बदबू आ रही है। जब मैं वापस लौट रहा था तो मैं खुद को परखने के लिए तैयार हो गया। मैंने मास्क हटाकर ताजी साँस लेने की कोशिश की लेकिन मुझे कुछ महसुस नहीं हुआ। तब मैंने अपने दोस्तों को यह बात बताई। बाद में हॉस्टल लौटकर मैंने बहुत सारी चीजों से परीक्षा की कहीं सचमुच मुझे कोरोना तो नहीं हो गया। मैंने परफ्यूम सूंघा लेकिन कोई असर नहीं हुआ। मैं उस रात को शंका और भय में सोया। मैंने सुबह कॉफी पी लेकिन मुझे स्वाद नहीं मिला। मैं उसी दिन लैब गया और कोरोना

टेस्टिंग के लिए नमूना दिया। जैसे बच्चे परीक्षा परिणाम का इंतजार करते हैं वैसे ही मैं कोरोना के टेस्ट का इंतजार कर रहा था। दुर्भाग्य से मेरा संदेह सही साबित हुआ।

मैंने अपने हॉस्टल मालिक को बता दिया। वह क्रोधित हो गया और मुझे तुरंत खाली करने को कहा। मैंने अनुरोध किया की मैं अपना सामान उस कमरे में रखूँगा और उसका किराया दूँगा। लेकिन मेरा हॉस्टल मालिक नहीं माना और मेरे हाथों में पैसे पकड़ाकर मुझे उसी वक्त हॉस्टल खाली करने का फरमान सुनाया। मुझे उस वक्त यह पता चला की कोरोना के समय मानवीय जज्बातों की कोई कद्र नहीं। बगल के कमरों मे रहने वाले मेरे दोस्त काम पर चले गए थे और मैं अकेला था। पर मेरे दुख को बाँटने या मदद करने वाला कोई नहीं था। मैं अपनी असहायावस्था पर आँसू बहा रहा था। मैंने अपने माता-पिता को नहीं बताया क्योंकि मैं उन्हें चिंतित करना नहीं चाहता था। उस वक्त मैंने अपना सामान हॉस्टल के एक लड़के के यहाँ रखवाया और खुद हॉस्टल से बाहर आ गया। हॉस्टल से मैं सीधा बस स्टैंड गया। वहाँ जाकर अपनी असहाय स्थिति को महसुस करके खूब रोया।

मैंने वहाँ से अपने कार्यालय के दोस्त युसुफ को फोन किया। युसुफ मेरे लिए किसी फरिश्ते से कम साबित नहीं हुआ। उसने मुझे मानसिक संबल प्रदान किया और आश्वासन दिया की वह मेरे क्वारांटाइन काल के दौरान रहने की व्यवस्था करवा देगा। मैं मानता हूँ कि युसुफ जैसे लोगों के कारण इंसानियत बची हुई है। किसी तरह मैंने स्थिति को संभाला और छात्रावास खाली कर अस्पताल में खुद को भर्ती करवाया। मैं हर दिन अपने माता-पिता से ऐसे बात करता था जैसे कुछ हुआ ही ना हो। उनके बास्बार पूछने पर मैं बताया करता था कि मैं अभी ऑफिस में ही हूँ। बिग बॉस की तरह बाहरी दुनिया के साथ संबंध के बिना चार दीवारों के अंदर रहकर मेरे क्वारंटाइन के दिन तेजी से बीत गए। उस समय मैं एक बुरे सपने की तरह महसूस करता था। लेकिन मैं चाहता हूँ कि जो कुछ भी हुआ वह आप लोगों के साथ साझा करूँ आज आलम यह है कि कोविड ने हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। कोरोना काल में हमें कुछ चीजों का खास कर ध्यान रखना है-

(1) मास्क, सैनिटाइजर वगैरह जरुरी वस्तुएँ हैं। इन्हें जरुर से अपने पास रखिए।

(2) सामाजिक दूरी बनाना एक जरूरत बन गई है। इसलिए यथासंभव सामाजिक दूरी बनाएँ।

(3) सुरक्षा उपायों का पालन करना बहुत जरूरी है। कम से कम दो गज की दूरी बनाकर चलिए। हर समय अपने साथ सैनिटाइजर लेकर घुमना चाहिए। और अपने हाथों को हमेशा धोते रहें। कम से कम तीस सेकंड तक अपने हाथों को धोना चाहिए।

'रामचरितमानस की लोकप्रिय चौपाइयाँ'

सुभाष चंद, हिन्दी अधिकारी

आज मनुष्य की आत्मिक चेतना आध्यात्म से भौतिकता की तरफ जा रही है। मानव मूल्य निरंतर अवसान उन्मुख है। भौतिक सुविधाएँ जुटाना ही प्रत्येक व्यक्ति का अहम लक्ष्य बनता जा रहा है जिसकी पूर्ति के लिए लोभवृति तथा प्रत्येक रिश्ते-नाते से भी लाभ कमाने की लालसा बढ़ती जा रही है और इसी के चलते रिश्ते-नातों का अस्तित्व पतन की तरफ अग्रसर है। भ्रष्ट मार्गों से ही सही लेकिन केवल भौतिक संसाधन जुटाने की भावना मानव मन में बलवती होती जा रही है। यही मूल वजह है कि मानव मूल्यों का लोप हुआ है

मानस की लोकोक्तिपूर्ण चौपाइयाँ तुलसीदासजी के विशद लोक अनुभव व गहन सामाजिक अनुभूति का प्रतिबिम्ब हैं जो भाषा में ढलाई किया हुआ उन्नत शिल्प का अद्‌वितीय उदहारण है। हालाँकि वाल्मीकि युग एवं उसके पूर्व अनंतकाल से चली आ रही लोक प्रचलित उक्तियाँ रामकथा के संस्कृत साहित्य में बहुत पहले से विद्‌यमान रही हैं; उनका भी सार ग्रहण कर लोक प्रचलित शब्दावली में ढालकर उनका चौपाइयों में संस्कार तुलसीदासजी ने किया है।

रामचरितमानस में सूक्तियों का उपयोग बड़ा ही सुन्दर बन पड़ा है। यूँ तो सम्पूर्ण मानस ही सुन्दर सूक्तियों का प्रबंधमय संगठन है लेकिन कुछ सूक्तियाँ तत्काल में प्रचलित लोकोक्तियों को भाषा में मात्राबद्ध की गई होंगी जो बड़ी ही लोकप्रिय हो गई हैं। यूँ तो भगवत गाथा सम्पूर्ण मानस ही चमत्कारिक प्रभाव छोड़ने वाला ग्रन्थ है।

यहाँ कुछ ऐसे दोहे व चौपाइयाँ प्रस्तुत हैं जिनका ध्यान, स्मरण या सस्वर उच्चारण मन को शांति और अज्ञात शुभ फल प्रदान करता है। संसार की उत्पत्ति और लय में ध्वनि का अनन्य योगदान है जो हमारे प्रागैतिहासिक दिव्य-पुरुषों के विग्रहों से अभिव्यक्त होता है। उदाहरण के लिए सरस्वतीजी के हाथ में वीणा केवल एक प्रतीक न होकर ब्रह्मांड की उत्पत्ति में ध्वनि-शब्द-नाद त्रय के संगम और उससे उत्पन्न अनंत शक्ति की अभिव्यक्ति दर्शाने के लिए है। इसीलिए गुरु सदैव 'नाम' (ध्वनि-नाद-शब्द) मंत्र देता है। इसी प्रकार के अनुप्रास नाद और मात्राओं में बंधी है मानस की चौपाइयाँ, जो पाठक को संकट और रुग्णता से दूर रखती हैं एवं वैभव प्रदान करती है।

मानस कुल सात काण्डों में विभाजित है और प्रत्येक काण्ड का अध्ययन फल विशेष के लिए विख्यात है जो बिना कामना के स्वतः ही प्राप्त हो जाता है।

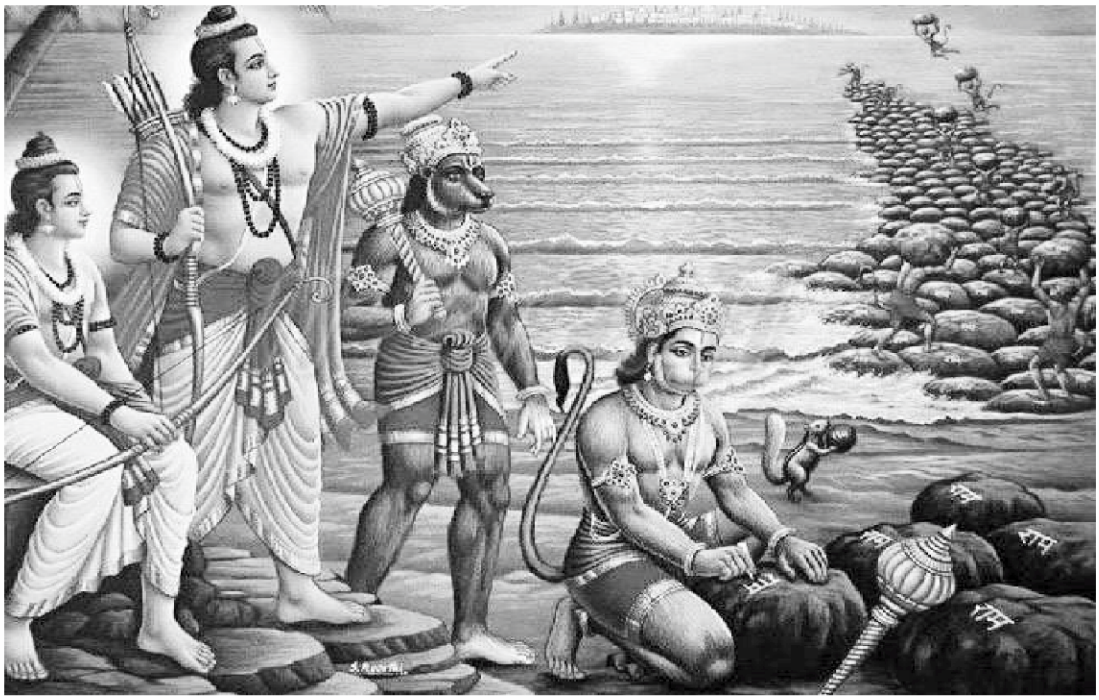

राम कथा मानवता की परिक्रमा तो है ही साथ ही कर्म, त्याग और भक्ति की त्रिवेणी भी है। राम जनजीवन को उच्च से उच्चतम स्तर पर उठाकर इसे सुंदर से सुंदरतम बनाते हैं। राम कथा उन चरित्रों का स्मरण दिलाती है, जो रामचरितमानस में प्रत्येक घर में रहते दिखते हैं। आज भी रामकथा के सभी पात्र जीवंत दिखाई पड़ते हैं। श्रीराम का जीवन आज भी प्रासंगिक है और रामचरित मानस में आई प्रत्येक सूक्ति मन्त्र साधना है तथा अमोघ मन्त्र-शक्ति लिए हुए है जिनका जाने-अनजाने में किया गया उच्चारण भी अत्यंत शुभ फल में परिणित हो जाता है।

यहाँ कुछ ऐसे दोहे व चौपाइयाँ प्रस्तुत हैं जिनका ध्यान करना अथवा स्मरण करने मात्र से मन को शांति और अज्ञात शुभ फल प्राप्त होता है। संसार की उत्पत्ति और लय में ध्वनि का अनन्य योगदान है जो हमारे प्रागैतिहासिक दिव्य-पुरुषों के विग्रहों से अभिव्यक्त होता है। सरस्वतीजी के हाथ में वीणा ध्वनि-शब्द-नाद के संगम और उसकी शक्ति की अभिव्यक्ति ही दर्शाती है। इसीलिए गुरु सदैव नाम (ध्वनि-नाद-शब्दशक्ति) मंत्र देता है। इसी प्रकार के अनुप्रास नाद और मात्राओं में बंधी है मानस की चौपाइयाँ, जो पाठक को संकट और रुग्णता से दूर रखती हैं एवं वैभव प्रदान करती है।

जो चौपाइयाँ इस हेतु संकलित की गई हैं उनका सन्दर्भ साथ ही लिखा गया है, यथा दोहा-5/चौपाई-4 का अर्थ: दोहा संख्या पाँच के बाद आई चौथी चौपाई से है और उसके बाद तत्-चौपाई का भावार्थ प्रस्तुत किया गया है, यथा :-

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥ *बालकाण्ड/दो.6*

संसार सागर की विशेषता बताते हुए तुलसीदासजी कहते हैं कि विधाता ने इस जड़-चेतन विश्व को गुण-दोषमय रचा है जिसके प्रभाव से दुष्ट और सज्जन सभी जन्म पाते हैं और उसी अपने स्वभाव के वशीभूत वे कुसंग व सत्संग की तरफ प्रेरित हो जाते हैं यही कारन है कि संतरूपी हंस दोषरूपी जल को छोड़कर गुणरूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं।

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह॥ *बालकाण्ड/दो.7(ख)*
महीने के दोनों पखवाड़ों में उजियारा और अँधेरा समान ही रहता है, परंतु विधाता ने इनके नाम में भेद कर दिया है (एक का नाम शुक्ल और दूसरे का नाम कृष्ण रख दिया)। एक को चंद्रमा का बढ़ाने वाला और दूसरे को उसे घटाने वाला समझकर जगत ने एक को सुयश और दूसरे को अपयश दे दिया।

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥ *बालकाण्ड/दो.7(ग)*
जगत में जितने भी जड़ और चेतन जीव हैं, सबको राममय जानकर मैं उन सबके चरणकमलों की सदा दोनों हाथ जोड़कर वंदना करता हूँ।

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी॥
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥ *बालकाण्ड/दो.7/चौ.1*
चौरासी लाख योनियों में चार प्रकार के (स्वेदज, अंडज, उद्भिज्ज, जरायुज) जीव जो जल, पृथ्वी और आकाश में रहते हैं, उन सबसे भरे हुए इस सारे जगत को भगवान् राम और माता सीता की ही छवि का बिम्ब मनारते हुए मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।

ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद॥ *बालकाण्ड/दोहा-50*

अगस्त्य आश्रम से रामभजन कर मार्ग में वापस आते हुए जब शिवजी ने सीता की तलाश करते प्रभु को जय सच्चिदानंद कहा और पुलकित हुए तो महादेवी सती के मन में जो विचार आया वह यहाँ प्रकट किया गया है- जो ब्रह्म सर्वव्यापक, मायारहित, अजन्मा, अगोचर, इच्छारहित और भेद रहित है और जिसे वेद भी नहीं जानते, क्या वह देह धारण करके मनुष्य हो सकता है?

बिष्नु जो सुर हित नरतनु धारी। सोउ सर्बग्य जथा त्रिपुरारी॥
खोजइ सो कि अग्य इव नारी। ग्यानधामपति असुरारी॥ *बालकाण्ड/दोहा-50/चौ.1*

उपर्युक्त के क्रम में सती आगे मन में विचार करती हैं कि यदि ब्रह्म न होकर ये विष्णु हैं तो भी विष्णु स्वयं महादेव के जैसे ही सर्वज्ञ हैं, जो देवताओं के हित के लिए मनुष्य शरीर धारण करने वाले ज्ञान के भंडार, लक्ष्मीपति और असुरों के शत्रु भगवान विष्णु हैं तो भी वे भला अपनी पत्नी को अज्ञ की भाँति क्यों ढूँढ़ते फिरेंगे!

होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा॥
अस कहि लगे जपन हरिनामा। गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा॥ *बालकाण्ड/दोहा-51/चौ.4*

जो कुछ राम ने रच रखा है वही होगा। तर्क करके कौन शाखा (विस्तार) बढ़ावे। ऐसा सोचकर शिव भगवान हरि का नाम जपने लगे और सती वहाँ गईं जहाँ सुख के धाम प्रभु राम थे।

जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा। जाइअ बिनु बोलेहुँ न सँदेहा॥
तदपि बिरोध मान जहँ कोई। तहाँ गएँ कल्यानु न होई॥ *बालकाण्ड/दोहा-61/चौ.3*

यद्यपि इसमें संदेह नहीं कि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के घर बिना बुलाए भी जाना चाहिए तो भी जहाँ कोई विरोध मानता हो, उसके घर जाने से कल्याण नहीं होता।

कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार।
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार॥ *बालकाण्ड/दोहा-68*

मुनीश्वर ने कहा- हे हिमवान! सुनो, विधाता ने ललाट पर जो कुछ लिख दिया है, उसे देवता, दानव, मनुष्य, नाग और मुनि कोई भी नहीं मिटा सकते।

बंदउँ बालरूप सोइ रामू। सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू॥
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥ *बालकाण्ड/दोहा-111/चौ.2*

मैं उन्हीं राम के बालरूप की वंदना करता हूँ, जिनका नाम जपने से सब सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। मंगल के धाम, अमंगल के हरने वाले और दशरथ के आँगन में खेलने वाले बालरूप राम मुझ पर कृपा करें।

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी॥
रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी॥ *बालकाण्ड/दोहा-113/चौ.1*

राम की कथा हाथ की सुंदर ताली है जो संदेह रूपी पक्षियों को उड़ा देती है। फिर रामकथा कलियुगरूपी वृक्ष को काटने के लिए कुल्हाड़ी है। हे गिरिराज कुमारी! तुम इसे आदर से सुनो।

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥ *बालकाण्ड/दोहा-115/चौ.1*

सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है मुनि, पुराण, पंडित और वेद सभी ऐसा कहते हैं। जो निर्गुण, अरूप(निराकार), अलख(अदृश्य) और अजन्मा है, वही भक्तों के प्रेमवश सगुण हो जाता है।

राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा॥
सहज प्रकासरूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना॥ *बालकाण्ड/दोहा-115/चौ.3*

राम सच्चिदानंदस्वरूप सूर्य हैं। वहाँ मोहरूपी रात्रि का लवलेश भी नहीं है। वे स्वभाव से ही प्रकाश रूप और भगवान है, वहाँ तो विज्ञानरूपी प्रातःकाल भी नहीं होता अज्ञानरूपी रात्रि हो तब तो विज्ञानरूपी प्रातःकाल हो; भगवान तो नित्य ज्ञानस्वरूप हैं।

हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना॥ *बालकाण्ड/दोहा-115/चौ.4*

हर्ष, शोक, ज्ञान, अज्ञान, अहंता और अभिमान- ये सब जीव के धर्म हैं। राम तो व्यापक ब्रह्म, परमानंदस्वरूप, परात्पर प्रभु और पुराण पुरुष हैं। इस बात को सारा जगत जानता है।

पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ॥ *बालकाण्ड/दोहा-116*

जो पुरुष प्रसिद्ध हैं, प्रकाश के भंडार हैं, सब रूपों में प्रकट हैं, जीव, माया और जगत सबके स्वामी हैं, वे ही रघुकुल मणि राम मेरे स्वामी हैं- ऐसा कहकर शिव ने उनको मस्तक नवाया।

बिषय करन सुर जीव समेता। सकल एक तें एक सचेता॥
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई॥ बालकाण्ड/दो.116/चौ.3

विषय, इंद्रियाँ, इंद्रियों के देवता और जीवात्मा, ये सब एक की सहायता से एक चेतन होते हैं। अर्थात विषयों का प्रकाश इंद्रियों से, इंद्रियों का इंद्रियों के देवताओं से और इंद्रिय-देवताओं का चेतन जीवात्मा से प्रकाश होता है। इन सबका जो परम प्रकाशक है (अर्थात जिससे इन सबका प्रकाश होता है), वही अनादि ब्रह्म अयोध्या नरेश राम हैं।

जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू॥
जासु सत्यता तें जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥ *बालकाण्ड/दो.116/चौ.4*

यह जगत प्रकाश्य है और राम इसके प्रकाशक हैं। वे माया के स्वामी और ज्ञान तथा गुणों के धाम हैं। जिनकी सत्ता से, मोह की सहायता पाकर जड़ माया भी सत्य-सी भासित होती है।

जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान॥ *बालकाण्ड/दो.118*

जिसका वेद और पंडित इस प्रकार वर्णन करते हैं और मुनि जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान राम हैं।

कासीं मरत जंतु अवलोकी। जासु नाम बल करउँ बिसोकी॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुबर सब उर अंतरजामी॥ *बालकाण्ड/दो.118/चौ.1*

हे पार्वती! जिनके नाम के बल से काशी में मरते हुए प्राणी को देखकर मैं उसे (राम मंत्र देकर) शोकरहित कर देता हूँ (मुक्त कर देता हूँ), वही मेरे प्रभु रघुश्रेष्ठ राम जड़-चेतन के स्वामी और सबके हृदय के भीतर की जानने वाले हैं।

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी। मत हमार अस सुनहि सयानी॥
तदपि संत मुनि बेद पुराना। जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना॥ *बालकाण्ड/दो.120/चौ.2*

हे विदूषे! सुनो, हमारा मत तो यह है कि बुद्धि, मन और वाणी से राम अतर्क्य हैं। तथापि संत, मुनि, वेद और पुराण अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार जैसा कुछ कहते हैं।

बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न कोइ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ॥ *बालकाण्ड/दो.124(क)*

तब महादेव ने हँसकर कहा- न कोई ज्ञानी है न मूर्ख। रघुनाथ जब जिसको जैसा करते हैं, वह उसी क्षण वैसा ही हो जाता है।

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता॥
रामचंद्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिं न गाए॥ *बालकाण्ड/दोहा-139/चौ.3*

हरि अनंत हैं और उनकी कथा भी अनंत है। सब संत लोग उसे बहुत प्रकार से कहते-सुनते हैं। रामचंद्र के सुंदर चरित्र करोड़ों कल्पों में भी गाए नहीं जा सकते।

सो मैं तुम्ह सन कहउँ सबु सुनु मुनीस मन लाइ।
रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ॥ *बालकाण्ड/दोहा-141*

हे मुनीश्वर भरद्वाज! मैं वही कथा जो शिवजी ने कही थी तुमसे कहता हूँ मन लगाकर सुनो। राम की कथा कलियुग के पापों को हरने वाली, कल्याण करने वाली और बड़ी सुंदर है॥

नेति नेति जेहि बेद निरूपा। निजानंद निरुपाधि अनूपा॥
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंस तें नाना॥ *बालकाण्ड/दोहा-143/चौ.3*

जिन्हें वेद 'नेति-नेति' 'यह भी नहीं, यह भी नहीं' कहकर निरूपण करते हैं। जो आनंदस्वरूप, उपाधि रहित और अनुपम हैं एवं जिनके अंश से अनेक शिव, ब्रह्मा और विष्णु भगवान प्रकट होते हैं।

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल॥ *बालकाण्ड/दोहा-190*

योग, लग्न, ग्रह, वार और तिथि सभी अनुकूल हो गए। जड़ और चेतन सब हर्ष से भर गए। (क्योंकि) राम का जन्म सुख का मूल है।

प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयउ पुनीत आजु यहु गेहू॥
आयसु होइ सो करौं गोसाईं। सेवकु लइह स्वामि सेवकाईं॥ अयोध्याकाण्ड/दो.8/चौ.4

परंतु प्रभु (आप) ने प्रभुता छोड़कर (स्वयं यहाँ पधारकर) जो स्नेह किया, इससे आज यह घर पवित्र हो गया। हे गोसाईं! (अब) जो आज्ञा हो, मैं वही करूँ। स्वामी की सेवा में ही सेवक का लाभ है।

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥ सुंदरकांड/दोहा.4/चौ.1

अयोध्यापुरी के राजा रघुनाथ को हृदय में रखे हुए सब काम करें तो विष अमृत हो जाता है, शत्रु मित्रता करने लगते हैं, समुद्र गाय के खुर के बराबर हो जाता है, अग्नि में शीतलता आ जाती है।

राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥
एहि सन सठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी॥ सुंदरकांड/दोहा.5/चौ.2

उन्होंने (विभीषण ने) राम नाम का स्मरण (उच्चारण) किया। हनुमान ने उन्हें सज्जन जाना और हृदय से हर्षित हुए। (हनुमान ने विचार किया कि) इनसे हठ करके (अपनी ओर से ही) परिचय करूँगा, क्योंकि साधु से कार्य की हानि नहीं होती (प्रत्युत लाभ ही होता है)।

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा॥ सुंदरकांड/दोहा.5/चौ.2

विभीषण ने कहा- हे पवनपुत्र! मेरी रहनी सुनो। मैं यहाँ वैसे ही रहता हूँ जैसे दाँतों के बीच में बेचारी जीभ। हे तात! मुझे अनाथ जानकर सूर्यकुलनाथ राम क्या कभी मुझ पर कृपा करेंगे?

सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा॥
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुबीर बान की॥ सुंदरकांड/दोहा.8/चौ.4

हे दशमुख ! सुन, जुगनू के प्रकाश से कभी कमलिनी खिल सकती है? जानकी फिर कहती हैं- तू (अपने लिए भी) ऐसा ही मन में समझ ले। रे दुष्ट! तुझे रघुवीर के बाण की खबर नहीं है।

अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू॥
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना॥ सुंदरकांड/दोहा.16/चौ.2

हे पुत्र! तुम अजर (बुढ़ापे से रहित), अमर और गुणों के खजाने होओ। रघुनाथ तुम पर बहुत कृपा करें। 'प्रभु कृपा करें' ऐसा कानों से सुनते ही हनुमान पूर्ण प्रेम में मग्न हो गए।

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥ सुंदरकांड/दोहा-49(ख)

शिव ने जो संपत्ति रावण को दसों सिरों की बलि देने पर दी थी, वही संपत्ति रघुनाथ ने विभीषण को बहुत सकुचते हुए दी।

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी॥ सुंदरकांड/दोहा-58/चौ.1

समुद्र ने भयभीत होकर प्रभु के चरण पकड़कर कहा- हे नाथ! मेरे सब अवगुण (दोष) क्षमा कीजिए। हे नाथ! आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनकी करनी स्वभाव से ही जड़ है।

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥ सुंदरकांड/दोहा-60

रघुनाथ का गुणगान संपूर्ण सुंदर मंगलों का देनेवाला है। जो इसे आदर सहित सुनेंगे, वे बिना किसी जहाज (अन्य साधन) के ही भवसागर को तर जाएँगे।

भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम।
बंदी बेष बेद तब आए जहँ श्रीराम॥ उत्तरकाण्ड/दोहा-12(ख)

सब देवता अलग-अलग स्तुति करके अपने-अपने लोक को चले गए। तब भाटों का रूप धारण करके चारों वेद वहाँ आए जहाँ श्रीराम थे।

बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास॥ उत्तरकाण्ड/दोहा-14(ख)

राम के गुणों का वर्णन करके उमापति महादेव हर्षित होकर कैलास को चले गए। तब प्रभु ने वानरों को सब प्रकार से सुख देने वाले डेरे दिलवाए।

'जल ही जीवन'

मंजू मोनिषा डी. पुत्री श्री एन. दिनकरन, व उपमहालेखाकार (प्र)

"जल जीवन का अनमोल रत्न है, इसे जीवन की कीमत पर बचाएं" यह कहावत हमें बताती है कि जीवन में पानी का कितना महत्व है। हमारे ग्रह पर जीवन के किए पानी अपरिहार्य है। वनस्पतियों और जीवों को अपने अस्तित्व के लिए पानी की आवश्यकता होती है। पानी हमारे शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है, संज्ञानात्मक कार्यों में सहायता करता है और हमारे ऊर्जा स्तर को बढ़ाता है। पारिस्थितिक संतुलन के लिए जल चक्र आवश्यक घटक है। महासागर, पानी का प्रमुख स्रोत है, यह समुद्री भोजन के रूप में भारी मात्रा में खनिजों और रासायनिक संपदा का भंडार है। पानी हमें बिजली पैदा करने में मदद करता है और हमारे आसपास के अधिकांश उद्योगों को माल के उत्पादन के लिए पानी की आवश्यकता होती है।

पृथ्वी के 3/4 भाग पर पानी है। प्रचुर मात्रा में होने के बावजूद, पानी बहुत सीमित है क्योंकि समुद्री जल खारा है जो पीने के लिए सुरक्षित नहीं है। समुद्री जल के अलावा उपलब्ध पानी का केवल 30% ही ताजा और पीने के लिए शुद्ध है। हमारी दैनिक गतिविधियाँ इस पारदर्शी, रंगहीन और गंधहीन तरल पर निर्भर हैं लेकिन हम मनुष्य, कृतज्ञता दर्शाए बिना, इस कीमती उपहार को अविवेकपूर्ण तरीके से कम कर रहे हैं। जलीय जंतुओं का घर उनसे छीना जा रहा है। इससे हरियाली समाप्त हो रही है और पृथ्वी जल्द ही अंतहीन गर्मी के साथ शुष्क हो जाएगी जिसके परिणामस्वरूप जैव विविधता को हानि पहुंचेगी। जीवों के सभी रूप विलुप्त हो जाएंगे और हमारी आने वाली पीढ़ियों का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। दूषित पानी से कई बीमारियां फैलती हैं। पानी को प्रदूषित करना, इसे उपभोग के लिए असुरक्षित बनाना, मनुष्यों और अन्य जीवों के लिए गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। पानी के बिना दुनिया में मानव जाति को कायम रखना असंभव बना हो जाएगा।

जल की हर बूंद मायने रखती है। हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि पानी कितना कीमती है और व्यक्तिगत स्तर पर पहल करें और पानी बचाने के लिए ये उपाय करें-

शॉवर में ज़्यादा देर तक न नहाएं जब उपयोग में न हो तो पानी बंद कर दें जैसे दांतों को ब्रश करते समय। पौधों को सींचने के लिए रसोई के पानी का प्रयोग करें शौचालय में पानी बचाने वाले उपकरण का उपयोग करने से मदद मिल सकती है। हर घर में वाटर हार्वेस्टिंग पिट लगवाएं। डिशवॉशर और वाशिंग मशीन को फुल होने पर ही चलाएं। वर्षा के पानी को एकत्र कर ताजे पानी की झीलों और तालाबों के पानी में संग्रहित किया जा सकता है। "हजारों लोग प्यार के बिना रहते हैं लेकिन पानी के बिना कोई नहीं"

मेरा दामाद मेरा भगवान

संजय कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

मेरा दामाद मेरे लिए भगवान था। वह आर्मी का ड्राइवर था लेकिन मुझे उस पर गर्व था और मुझे यह उम्मीद थी कि वह एक दिन भारत का राष्ट्रपति बनेगा। हो सकता है कि आप लोगों को मेरी बातों को सुनकर हँसी आएगी लेकिन आप यह बताइए कि सेना का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता है? अरे भैय्या, राष्ट्रपति। तो मुझे यह उम्मीद थी कि एक दिन तरक्की करते करते वह भारत का राष्ट्रपति बन जाएगा। जिस दिन मेरी बेटी की शादी तय हुई उसी दिन मैने इंद्र भगवान के मंदिर में 100 किलो गेंहू के लड्डू चढ़ाए। यह इंद्र भगवान का मंदिर भी मेरा बनवाया हुआ है। असल में यह बात उस वक्त की है जब बचपन में मेरी बेटी छोटी थी और मेरी सारी बहनें जवान। मेरी सबसे बड़ी बहन की शादी एक बहुत बड़े खानदान में हुई लेकिन लड़का बहुत काला था। सच बताऊँ मुझे यह रिश्ता बिल्कुल पसंद नहीं था और मैं यह चाहता था कि यह रिश्ता टूट जाए। कहाँ मेरी बहन, दुध जैसी गोरी और कहाँ वह लड़का कोयले की तरह काला। मेरे पिता ने मुझे अपने पास बिठाया और हुक्का गुड़गुड़ाते हुए बोले"देख भीखू, रुप रंग के पीछे ज्यादा नहीं भागना चाहिए। रुप आज है, कल नहीं। तू लड़के का गुण देख। चार चार ट्रक चलते हैं उसके। पैसों में खेलता है वह। अरे बेटा, हमारी शांति राज करेगी। ऊपर से, अगले महीने शराब की फैक्ट्री डालने वाला है वह अपने जिले में। बडा संस्कारी लड़का है। कह रहा था कि उसके यहाँ से बनी शराब सस्ते में मिलेगी और साथ में वह सबको मुफ्त में पकौड़ा और चखना देगा। भगवान उसका भला करे। उसकी दुकान के भरोसे मेरा बुढ़ापा अच्छे से कट जाएगा बेटा। "मेरे ना चाहने के बावजूद पिताजी ने शांति की शादी उस कोयले के खदान से कर दी। लेकिन उसी दिन से मुझे काले रंग से नफरत हो गई। मैंने काला छाता लेकर निकलना बंद कर दिया और मैने इलाहाबाद से नीली छतरी मँगवाई। एक दिन मेरी पत्नी पूजाघर में गाना गा रही थी "जसुमति मैया से बोले नंदलाला, राधा क्यों गोरी मैं क्यों काला"? उस दिन मेरा ध्यान इस तरफ गया कि कृष्ण भगवान भी तो काले हैं।

मैं मंदिर में घुसा और कृष्ण भगवान की मूर्ति उठाकर भागने लगा। मेरी पत्नी मुझे रोकती रह गई लेकिन मैंने उसे डाँटकर कहा "यह काला भगवान यहाँ नहीं रहेगा। अब इस घर में सिर्फ गोरे देवताओं की पूजा होगी"। बस यही संकल्प लेकर मैंने गाँव के बाहर इंद्र भगवान का मंदिर बनवाया। इस मंदिर के बाहर सुबह-शाम क्या भीड़ लगती थी! और इन्हीं इंद्र भगवान की कृपा से

मैंने अपनी बाकी बहनों का विवाह धूमधाम से सुंदर लड़कों से करवाया। मेरी बहनों में एक खास बात यह है कि वे तुरंत ही एक घर के चार घर करन देने की कला में निपुण हैं। मेरी हर बहन ने अपनी सास ही नहीं अपितु उनसे हमदर्दी रखने वाले प्रत्येक साधू-असाधु के नाक में ऐसा दम किया कि सबको अस्थमा हो गया। मेरी बहनें अपने ससुराल में राज करती हैं। और मैं यह उम्मीद करता था कि मेरी बेटी की किस्मत भी कुछ ऐसी ही हो। एक बात आपको और बता दूँ कि घर तोड़ने में और घर में कलह-झंझट कराने में मेरी बेटी मेरी बहनों से इक्कीस है या सांस्कृतिक भाषा में कहें तो सर्वगुण संपन्न है। बहरहाल कहानी पर वापस लौटते हैं।

दिन पंख लगाए उड़ते गए और एक दिन मेरी बेटी प्रियंका बड़ी हो गई। मैं सपने संजोने लगा कि एक दिन अपनी बेटी को बहुत ऊँचे खानदान में ब्याहूँगा। गाँव के रंमढंग देखकर मैं बहुत भयभीत रहता था। हर दिन खबर मिलती कि फलाँ लड़की किसी लड़के के साथ तीव्र गति से भाग गई और उन्होंने मंदिर में शादी भी कर ली। हैरान तो मैं तब हुआ, जब मुझे पता चला कि पड़ोस में रहने वाली राधा तो एक लड़की के साथ ही भाग गई थी। मैंने उसी दिन फैसला कर लिया था कि जल्द से जल्द प्रियंका की शादी किसी गोरे लड़के से कर दूँगा। दैवयोग से एक दिन मैं जब यही सब सोच रहा था तो प्रभात मिश्रा आ गए। मिश्रा जी खटिया पर बैठे और फिर बोले "का बबुआन, बेटी का बियाह नहीं कीजिएगा'? एक बहुते ही अच्छा रिश्ता है नजर में। बताएँ का? लड़का फौज में अफसरवा है भाई! बिटिया राज करेगी, राज"। मैंने पूछा "यह बताइए मिश्रा जी कि लड़का देखने में कैसा है"। प्रभात मिश्रा बोले "एकदम सुजीतवा की माफिक है ससुरा"। क्या रंग है, क्या रुप है? आहा! और गौरा तो ऐसा है कि रात को कहीं निकल जाए तो उजाला हो जाए"। मिश्रा की बातें सुनकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मेरा मानना है कि गोरापन और सुंदरता संसार का सबसे बड़ा गुण है। इसके आगे संसार के सारे गुण पानी भरते हैं। आप लोग ही बताइए कि लोग सबसे पहले आपका चेहरा देखेंगे कि आपकी डिग्री? मैनें कहा "मिश्रा जी, हमें यह रिश्ता मंजूर है। आपने कहा कि लड़का गोरा है। बस इतना ही काफी है मेरे लिए। "इस पर मेरे बड़े बेटे माधव ने कहा "अरे पंडित जी आपने बताया नहीं कि लड़का किस पोस्ट पर है फौज में?" इस पर मिश्रा जी बोले "अरे बिटुआ! यह जानकर क्या करोगे? चलो, बताया तुमको की लड़का आर्मी का ड्राइवर है। तो क्या! बेटा, सरकारी नौकरी है, सरकारी। ऊपर से फौज के भत्ते! हैं? तुम्हारी तरह बाप के पैसों पर तो नहीं पलता। आया कुछ समझ में कि तनिक और खौलकर समझाएँ"? माधव भड़ककर कहने लगा "ओ मिश्रा! ड्राइवर से करइएगा हमरी बहन की शादी? कुछ अकल ठिकाने है कि बेच खाए हो? यहाँ बिहार में तो हम लोग ड्राईवर को बबोरियत दूर करने के लिए यूँही दो थप्पड़ मार दिया करते हैं, ऊपर से भाड़ा नहीं देते वो अलग"। इस पर मिश्रा जी भड़क गए "बेटा, यह आर्मी का ड्राइवर है, तुम्हारे छपरा और सिवान का बस ड्राइवर नहीं। वो आर्मी के बड़े बड़े अफ्सरान को खतरनाक-खतरनाक जगहों पर लेकर जाता है। उसे तो राष्ट्रपति पुरस्कार मिलना चाहिए"। माधव और मिश्रा की नोंक झोंक बढ़ती जा रही थी। मैंने चिल्लाकर इस झगड़े को रोका "बस माधव। लड़का सरकारी काम करता है और सबसे बड़ी बात कि गोरा है। प्रियंका की शादी इसी लड़के से होगी"। प्रभात मिश्रा का मूँह खिल गया था। वहीं पर जब यह सब बातें चल रही थी तो मेरी चाची बैठे-बैठे यह सब बातें सुन रही थी। वह बोली "मिश्रा जी! अंकिता भी तो बड़ी हो

गई है। झूठ क्या कहूँ? प्रियंका से एक साल बड़ी ही है। लगे हाथ उसके लिए भी कोई रिश्ता बता देते"। मिश्रा ने गंभीर मुद्रा बनाई और बोले "काकी! एक रिश्ता तो है। लड़का अभी अभी इंकम-टैक्सवा में अफसर हुआ है। लेकिन ड्राइवर की तरह गोरा नहीं है, थोड़ा पक्के रंग है और ड्राइवर की तरह मजे की नौकरी भी नहीं है। सुना है कि कुछ आईएस वईएस की तैयारी सी भी कर रहा है। कहिए तो बात आगे बढ़ाऊँ"?

उस दिन मिश्रा ने दो-दो काम बनाए थे। एक ही घर से दो रिश्तों की बात उन्होंने पक्की की थी। और एक दिन हम लोगों ने शहर के मंदिर में लड़का-लड़की के मुलाकात का दिन तय कर लिया था। मेरे चाचाजी ने अपनी बेटी अंकिता की दिखवटी भी उसी मंदिर में रखवाई थी। हम लोगों ने तय किया था कि जो भी खर्चा आएगा वह हम लोग मिलजुल कर बाँट लेंगे। सुबह 11 बजे मेरे दामाद जी अपने रिश्तेदारों के साथ मंदिर पहूँचे। चास्चार बड़ी गाड़ियों में उनका काफिला आया था। जैसे ही मेरे दामाद जी उतरे, मैं उनको देखता ही रह गया। मैं अपने आप को रोक नहीं पाया और मैंने दामाद जी को एक सैल्यूट मारी और जोर से चिल्लाया 'सैल्यूट मेजर साब'। मेरे दामाद जी भी घबरा गए और उन्होनें कहा 'कहाँ हैं मेजर साब'। मैने कहा "अरे मैने आपको मेजर साब कहा है भई!" मेरे दामाद ने कहा "जी। आप तो मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं। मैं मेजर नहीं हूँ। मैं तो मेजर साब का ड्राईवर हूँ।"इस पर मैंने उनकी बात को काटते हुए कहा "अरे, मेरे लिए तो आप ही मेजर हैं। घबराइए मत एक दिन आप मेजर बनेंगे। ब्रिगेडियर भी बनेंगें। अरे मैं तो कहता हूँ की आप एक दिन राष्ट्रपति बनेंगे"। बहरहाल मैने अपनी बेटी को बुलाया। लड़के वालों ने लड़की देखी, हम लोगों ने लड़के वालों को देखा और रिश्ता पक्का हो गया। उसी समय अंकिता को देखने के लिए लड़के वाले भी आ गए। उनकी एक ही गाड़ी आयी थी। मैं मन ही मन बहुत खुश हुआ कि चलो इन लोगों की शादी अच्छे घर में नहीं हो रही। लेकिन अगले ही पल गाड़ी में से 6 फूट का एक गोरा, जवान और सुंदर लड़का निकला। सच बताऊँ, मैं अंदर तक जल-भुन गया। मैंने मन में यह निश्चय किया कि अगर अंकिता की शादी इस लड़के से हो गई तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। मैं यह सब सोच ही रहा तो गाड़ी के अंदर से एक और साँवला लड़का निकला। वह टाई पहने हुए था। मैं समझ गया की असली लड़का यह है। वह गोरा और लंबा लड़का मूल-लड़के का भाई था। मैंने राहत की साँस ली। मैं जल्द से उसी मंदिर के प्रांगण में हनुमान जी के मंदिर के सामने भागा और दंडवत होकर रोने लगा 'तुम बड़े अच्छे हो प्रभु। तुमने मेरी लाज रख ली। मेरी बेटी के लिए इतना सुंदर लड़का और अंकिता के लिए वह काला भाण्ड। वाह प्रभु! धन्य तुम्हारी लीला! अगर इस जगह मेरी बेटी की शादी हो गई तो मैं वादा करता हूँ कि श्रीलंका आऊँगा और कम से कम दो पेड़ श्रीलंका में जरुर जलाऊँगा"।

भगवान ने मेरी सुन ली। लड़के वालों को मेरी बेटी प्रियंका बहुत पसंद आई। मेरे समधी ने मुझसे कहा "देखिए चौधरी। वैसे तो हम पैसों के लालची नहीं है। भगवान का दिया हुआ सब कुछ है और कोरोना के टाईम पर लड़के की सरकारी नौकरी है। लेकिन हम चाहते हैं कि आप बारातियों का स्वागत पानपराग और हमारा 10 लाख रुपये से करें"। दस लाख रुपए की बात सुनकर मेरा दिमाग चकरा गया। मैंने कहा "समधी जी! आजकल के वक्त भला कौन लेता है दहेज"। समधी जी बोले की "हम लेते हैं भई! और बड़ी शान से कहते हैं कि हम लेते हैं। वह देख

रहें हैं, मेरे बड़े बेटे को। जब तक पूरा दहेज मेरे पास नहीं आया तब तक उसको मैंने हनीमुन पर नहीं भेजा। आप सोच लीजिए। मेरा लड़का लाखों में एक है। परसों ही भोजपुरी फिल्म की हीरोईन का रिश्ता आया था लेकिन हमने इंकार कर दिया"। मैने मन में सोचा कि ठीक है, अपनी जमीन बेच दूँगा, लेकिन शादी तो प्रियंका की यहीं होगी। मैने कहा, चलो जी ठीक है, हमें मंजूर है। समधी जी ने खुश होकर मुझे छाती से लगा लिया और मिठाई मँगवाई। मुझे वह काले रंग की मिठाई खिला रहे थे। मैंने उनका हाथ पकड़ा और कहा "समधी जी। आप मुझे वह सफेद रसगुल्ला खिला दीजिए। मैं खुशी-खुशी खा लूंगा लेकिन यह काली मिठाई मत खिलइए। बड़ा अपशकुन होता है"। उसी दिन प्रियंका की शादी की तारीख तय हो गई। 14 जुन 2020 को मुहूर्त रखा।

और देखते-देखते शादी का दिन भी आ गया। बारातियों के स्वागत के लिए मैंने बनारस से पान और सुपाड़ी मँगाए थे। बारातियों के स्वागत में 10 घोड़े दरवाजे पर खड़े थे। उसी दिन अचानक से दोपहर 1 बजे खबर मिली की सुशांतसिंह राजपूत की मौत हो गई। सारे घर में मातम का माहौल फैल गया। सुशांत सिंह राजपूत हमारे बिहार से ही बॉलीवुड गए थे और अपनी पहचान बनाई थी। मैं खुद बहुत दुखी था लेकिन मैंने भगवान से प्रार्थना की कि "हे प्रभु! अब और कुछ अपशकुन मत कीजिएगा शादी में"। शाम को 5 बजे बारात मुख्य द्वार पर लग गई। मेरे दामाद जी क्या लग रहे थे दुल्हे के लिबास में। मेरा समधी लेकिन एक नंबर का लिच्चर आदमी निकला। अपने आप को महान दिखाने के चक्कर में वह 5000 बारातियों को लेकर पहुँच गया। उसने आस-पास के गाँव से भी बाराती उठा लिए थे और सबको कहा था कि चलो बारात में सबको पैसा मिलेगा। पैसे के लालच में आसपास के गाँव के लोग भी बारात में आ गए। अब मेरे समधी ने अजीब शर्त रख दी। उसने कहा की "भोज पर समधी जी, हर बाराती के प्लेट में खाने के पहले 100 रुपए के नोट आप रखेंगे। और अगर आपने ऐसा नहीं किया तो बारात वापस चली जाएगी"। मैं समधी की यह शर्त सुनकर चौक गया। मैनें हिसाब लगाया 5000 बारातीयों के प्लेट में 100 रुपए। यानि कुल 500000 रुपए। मेरे समधी ने तो मेरा भट्टा बैठा दिया था। मैं अंकिता के बड़े भाई के पास गया। वह आर्मी का जवान था। मैंने उससे कहा "बेटा त्रिलोक। तू तो मेरे भाई जैसा है। प्रियंका तेरी बेटी जैसी है। बेटा मेरी मदद कर दे। मुझे सिर्फ पाँच लाख रुपयों की सख्त जरुरत आन पड़ी है। समझ की यह तेरे हाथ नहीं, पैर हैं। मैं पैर पड़ता हूँ"। त्रिलोकी ने मेरी बात मान ली। उसने मेरी मदद की और इस तरह प्रियंका की शादी धूमधाम से संपन्न हुई।

लेकिन दोस्तों! मेरा असली दुख तो असल में बाद में शुरु हुआ। मेरा दामाद तो पहले ही दिन से मेरी बेटी का गुलाम हो गया। नहीं, नहीं मुझे इस बात का दुख नहीं है। मुझे तो इस बात की बहुत ही खुशी है कि मेरा दामाद अब मेरी बेटी के इशारों पर नाचता है मेरा दामाद मेरी बेटी का इतना बड़ा गुलाम निकला कि शादी के दूसरे ही दिन वह मेरी बेटी को लेकर हमारे गाँव आ गया। मैं तो पहले घबरा गया और पूछा कि सब कुछ कुशल मंगल तो है? इस पर वह बोला "पापाजी। प्रियंका को आप लोगों की कमी बहुत महसूस हो रही थी। और मैं प्रियंका के चेहरे पर उदासी नहीं देख सकता था। इसलिए मैं प्रियंका को लेकर आ गया"। लेकिन भाईयों, मेरे असली गम का कारण कुछ दूसरा है। हुआ यूँ कि मैंने अपनी बेटी की शादी की खुशी में गाँव में बहुत बड़ी दावत दी थी। तरह तरह के पकवान बने थे। मछली, मुर्गा का पूरा इंतजाम था। इसमें शराब

का भी बंदोबस्त था। मेरे सारे दोस्त शराब के नशे में धुत थे। मैंने भी उस रात जी खोल कर शराब पी ली थी। मेरे दोस्त कन्हैया ने शराब के नशे में मुझसे कहा 'अरे पगले, तेरी तरह का बेवकूफ इंसान मैंने आज तक नहीं देखा। तूने अपनी बेटी की शादी एक मामूली आर्मी के ड्राईवर से कर दी और खुद तेरी चचेरी बहन अंकिता की शादी इंकमटैक्स इंस्पेक्टर से हो रही है। जानता है तू कि इंकमटैक्स इंस्पेक्टर का क्या रुतबा होता है। लाखों की ऊपरी कमाई होती है। गधा कहीं का। ड्राईवर से शादी करके देखो कैसा इतरा रहा है"। मंटू ने उस पर से उसका साथ दिया "भिखारी लाल चौधरी उर्फ भीखू। तुम नाम के भी भिखारी हो और काम से भी भिखारी निकले। अंकिता का होने वाला पति मालूम है ना, आईएस की तैयारी कर रहा है। जानता है तू गधे! कि आईएस होता क्या है? पूरे जिले का मालिक। और यह देखो, यह साहब ड्राईवर से शादी करके इतरा रहे हैं और पूरे गाँव को मछली चावल खाने का इन्होंने निमंत्रण दिया है। शर्म कर कुछ और डूब मर चुल्लु भर पानी में'। अपने दोस्तों की बात सुनकर मेरा नशा काफूर हो गया। ऐसा लग रहा था कि मुझे काटो तो खुन नहीं। अब तो मेरी बेटी की शादी हो गई थी। मैने सोचा था कि मेरा दामाद एक दिन राष्ट्रपति बनेगा लेकिन उस दिन जाना कि ड्राईवर तो ड्राईवर होता है, फिर चाहे वह बस का हो या आर्मी का।

सुबह मेरी नींद खुली तो मैं बहुत पछता रहा था। लेकिन मेरी बेटी की शादी तो हो चुकी थी। अब मैं क्या कर सकता था। लेकिन मैं गाँव का ठेठ गँवार आदमी हूँ। मेरे अंदर यह फितरत है कि अगर खुद मेरा भला नहीं हुआ तो सामने वाले का भी मैं भला नहीं होने दूँगा। भगवान की कृपा से मेरी पत्नी भी इन्हीं गुणों से संपन्न है। किसी का घर बसता देखकर मेरी पत्नी को बहुत दुख होता है और अगर किसी भी इंसान को मेरी पत्नी खाना खाते हुए देख ले तो मान कर चलिए कि उसका हाजमा खराब होगा ही होगा। मैंने अपनी पत्नी के साथ मिलकर षड़यंत्र रचा कि किसी भी तरह हमें अंकिता की शादी उस इंकम-टैक्स इंस्पेक्टर के साथ तोड़नी है। मैंने अपनी पत्नी को कहा की "आरती, तुम आज आँगन में बखेड़ा खड़ा करो। और ऐसी लड़ाई लड़ो कि अंकिता और उसके घरवाले परेशान हो जाएँ"। आरती आँगन में गई, तब तक उसकी सहेलियाँ आँगन में आ चुकी थी। सबको सुनाने के उद्देश्य से आरती ने ताना मारा "आहा! देखो तो मेरे दामाद को। कितना गोरा है! लेकिन कुछ लोगों का नसीब उतना अच्छा थोड़े ही होता है। लोग गोरा लड़का खोज नहीं पाते तो काले से शादी कर देते हैं। इससे तो अच्छा है कि अपनी बहन को भैंसे के साथ रवाना कर देता"। अंकिता की भाभी कुसुम आँगन में ही खड़ी थी। वह तिलमिला गई और गुस्से में बोली "शर्म करो भाभी। अंकिता के भैया ने आखिरी मौके पर पैसे नहीं दिए होते तो आज प्रियंका की बारात नहीं उठ पाती। जिस थाली में आप खाती हैं उसी में छेद करती हैं"। अब लड़ाई में कूदने की बारी मेरी थी। मैंने अपने धोती को ऊपर चढ़ाया और लड़ने के तेवर में बोला "हाँ। तो कोई एहसान नहीं किया तुम्हारे पति ने? मेरे एक बीघे खेत मैंने उसके पास बंधक रखे हैं। जैसे ही पैसे आएँगे, मैं वह पैसे तुम पति-पत्नी के मूँह पर मारूँगा"। इस पर त्रिलोकी बीच में आ गया और तैश में बोला "वाह भैया। कितने एहशान फरामोश हो तुम। उस दिन तो हाथ जोड़कर मुझसे पैसों की भीख माँग रहे थे और आज देखो तेवर ही बदले हुए हैं'। मेरा आँगन युद्ध का मैदान बन गया था। बस सिर्फ वहाँ भीम और दुर्योधन के गदे की कमी थी। आसपास के घर

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए हिंदी अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए महालेखाकार महोदय

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए व उपमहालेखाकार महोदय

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए व लेखा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में रंगारंग प्रस्तुति का आनंद लेते दर्शक

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में मंचस्थ अधिकारियों का स्वागत सम्बोधन- सुश्री दीपासिंह

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में ईश वंदना करते हुए

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में गीत प्रस्तुति

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में गीत प्रस्तुत करती महिला कार्मिक

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में गीत का आनंद लेते हुए दर्शक

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में प्रदर्शित हास्य कथा 'दिवाली' का आनंद लेते दर्शक

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में पारितोषिक देते हुए महालेखाकार महोदय

हिंदी पखवाड़ा 2021: उद्घाटन समारोह में निर्देश देते हुए महालेखाकार महोदय

हिंदी पखवाड़ा 2021: निबंध स्पर्धा में भाग लेते प्रतिभागी

हिंदी पखवाड़ा 2021: क्विज स्पर्धा की एक झलक

हिंदी पखवाड़ा 2021: स्वागत करती हुई महिला कार्मिक

की औरतें खुश होकर मेरे घर की तरफ आ रही थीं जैसे मेरा घर कोई तीर्थस्थल हो। मैने तो दो बच्चों को अपने घर के बाहर बात करते सुना "अरे चल-चल सोनू, लड़ाई हो रही है। बड़ा मजा आएगा। किसी का सर फूटेगा"। त्रिलोकी ने इसी बीच कहा "तुम रंग की क्या बात करते हो भैया? अंकिता के पति का पद देखो। वह इंकम टैक्स इंस्पेक्टर है। ऊपर से वह आईएस की तैयारी भी कर रहा है। और तुम्हारा दामाद क्या करता है। सिर्फ आर्मी का ड्राईवर ही है ना। उससे ज्यादा तो कुछ नहीं"। मैंने कहा "अरे तुमको क्या पता? कि आर्मी का ड्राईवर कितना बड़ा पद है! तुम्हारे इंकमटैक्स इंस्पेकटर से भी बड़ा पद। वह आईएस वाईएस लोगों को अपने यहाँ नौकरी पर रख लेगा"। मेरी बात खतम होते ही सारे लोग ठहाका मार कर हँसने लगे। मुझे खुद पर इतनी शर्म महसूस हुई कि आपको मैं बता नहीं सकता। एक एक कर सारे लोग हँसते हुए चले गए। यहाँ तक की त्रिलोकी भी हँसता हुआ अपनी पत्नी के कंधे पर हाथ रखकर कमरे में चला गया। मैं रात को आरती के गोद में फूटफूट कर रोया "आरती! आज तुम्हारा भीखारी लाल सचमुच का भिखारी हो गया री। मैं कहीं का नहीं रहा। गोरे रंग के चक्कर में मैंने हीरे को फेंककर कोयला उठा लिया। नहीं आरती। अब सैलाब आएगा। मैं यह शादी नहीं होने दूँगा। तू समझ ले कि मैं यह शादी तोड़कर ही रहूँगा"।

देखते देखते अंकिता की शादी का दिन भी नजदीक आ गया। मेरे सारे रिश्तेदार इस शादी में पहुँच चुके थे। लेकिन मेरे दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। मैंने अपने दोस्त जो सर्कस में काम करता था उससे नकली बाल और दाढ़ी का सेट मँगवाया। फिर मेरे दूसरे दोस्त से जुलाब की गोलियाँ मँगवाई। मैने सोचा की दुल्हे के घर रात को पहुँचकर खाने में चुपके से जुलाब मिला दुँगा। सारे लोग दस्त से परेशान होकर पेट पकड़कर इधर से उधर भागेंगे। कितना मजा आएगा! मेरी बाइक आज रिकार्ड तोड़ने वाली थी। 100 की स्पीड से मैं अपनी बाइक अंकिता के होने वाले पति के गाँव की तरफ भगा रहा था। आज तो लग रहा था कि साला अपुनइच भगवान है। अब मैं अंकिता के ससुराल से मात्र 3 किलोमीटर दूर था। जैसे ही मेरी बाइक खेतों की तरफ मुड़ी मैंने एक अद्भूत दृश्य देखा। मैंने वहाँ 50 साँड़ो का झुंड देखा। इतने सारे साँड़ मैंने एक साथ कभी नहीं देखे थे। मैं अपलक खड़ा होकर उनको देखने लगा। अचानक से उन साँड़ो ने मुझे देखा। पता नहीं उन साँड़ो ने आपस में क्या बातचीत की लेकिन अचानक से सारे मेरी तरफ भागने लगे। मैं घबरा गया। मैंने अपनी बाइक चालू की और सरपट भागा। लेकिन साँड़ो का यह झुंड मेरे पीछे क्यों पड़ा है। अचानक से मुझे याद आया कि मैनें तो लाल जैकेट पहन रखा है। यह साँड़ इसलिए मेरे पीछे पड़े हैं। मैनें मन ही मन इंद्र भगवान को स्मरण किया "हे प्रभु! यदि आप मुझे आज बचा लोगे तो मैं सारे पाप छोड़ दूँगा"। लेकिन वह साँड़ कहाँ रुकने वाले थे। लग रहा था कि सारे ऑलिंपिक में भाग रहे थे। अचानक से उनमें से एक साँड़ ने मेरी बाइक को टक्कर मारी। टक्कर से मेरी बाइक दूर गिर गई। अब मैं था और उन साँड़ो का झूंड। अब उन आदमखोरों ने मुझे सींगो से उठा उठा कर पटका। मेरे सारे कपड़े फट गए थे। पगड़ी और दाढ़ी गिर चुकी थी। सिर्फ मेर शरीर पर अमूल की गंजी और नीचे लक्स कॉजी का लाल रंग का अंडरवियर था। लेकिन साँड़ फिर भी कहाँ रुकने वाले थे। वह मुझे दौड़ाए जा रहे थे। मेरे लाल अंडरवियर को देखकर साँड़ मुस्कुराए। शायद वह उसे भी फाड़ देना चाहते थे। मैं अपनी इज्जत बचाकर भागा। भागते भागते मैं अंकिता

के ससुराल पहुँच गया। मैं रो रहा था। साँड़ो से बचने के लिए मैं एक पेड़ के पीछे छिप गया। मैंने सोचा कि जो हुआ सो हुआ लेकिन अपना काम मैं कर के जाऊँगा। उसी गंजी और बरमूड़ा में मैं अंकिता के ससुराल की तरफ चला गया। रात हो गई थी और गाँव में रात्रिभोज का आयोजन था। कल सुबह बारात यहाँ से निकलकर मेरे गाँव आने वाली थी।

मैं चुपके चुपके उस ओर गया जहाँ पर खाना बन रहा था। दूसरी मंजिल पर एक बड़ा सा शामियाना लगा हुआ था और बड़ी बड़ी कराहियों में बढ़िया बढ़िया पकवान रखे हुए थे। किसी कड़ाही से बिरयानी की खुशबु आ रही थी। तो किसी से मछली की। किसी में रायता रखा था, तो किसी में मुर्ग मुसल्लम। दैवयोग से उस समय वहाँ कोई नहीं था। मैं चुपके चुपके कड़ाहियों के पास पहुँचा और जैसे ही मैं सब में जुलाब मिलाने जा रहा था अचानक से दूसरी मंजिल का छत एक आवाज के साथ चरमराते हुए टूट गया। ना सिर्फ दूसरी मंजिल का छत टूटा बल्कि सारी कड़ाहियाँ, उनमें रखा खाना और साथ में मैं भी जमीन पर आ चुके थे। उस समय आँगन में कोई नहीं था। मेरे ऊपर दाल गिर चुकी थी। कई लेग पीस मेरे मूँह में जा चुके थे और मेरी पीठ की हड्डी टूट चुकी थी। बाहर मुझे सुनाई दे रहा था कि कोई किसी को डाँट रहा है "अरे, तुझे पहले ही कहा था कि छत बनवा ले। अब पड़ गए ना लेने के देने। देख कितना नुकसान हो गया"। दूसरी आवाज ने कहा "अरे, बाबुजी उतना दहेज मिला ही कहाँ कि छत बनवा लिया जाए"। मेरी चेतना लुप्त हो चली थी। मैने बंद होती आँखो से देखा कि बहुत सारे लोग आँगन में आए और मुझे उठाया। करीब तीन घंटे बाद मेरी नींद खुली तो मैने देखा कि मैं एक पलंग पर लेटा हूँ और एक डॉक्टर मेरे पास बैठा है। कई सारे लोगों ने हमें घेर रखा था। लड़के के चाचा ने मुझे पहचान लिया था। उन्होंने कहा "अरे आप तो अंकिता के चचेरे भाई हैं ना। उस दिन आपको दिखवटी में देखा था और आप यहाँ इतनी रात गए कैसे। मैं पूरी तरह फँस चुका था इसलिए मैने कहानी बनाई "जी। मैं यह देखने के लिए आया था कि यहाँ पर सारा इंतजाम ठीक तो है ना। लेकिन रास्ते में मुझे साँड़ो ने बहुत मारा। ऊपर से यहाँ पर यह छत टूट गई। आज सब कुछ बुरा ही हुआ"। अंकिता के पति के दादा ने कहा "आपके साथ बहुत बुरा हुआ। हमें आप माफ कीजिए। अब आप हमारे मेहमान हुए। आप रात भर आराम कीजिए। कल आप हम लोगों की तरफ से बारात में चलिए। आपकी खातिरदारी में कोई कमी नहीं होगी। रात भर मेरा छोटा पोता राहूल जो डाक्टर भी है आपकी देखभाल करेगा"। अगली सुबह मैं अंकिता के ससुराल मैं तैयार हुआ। मैं पछता रहा था कि क्या सोचा था और क्या हो गया। जल्द ही बारात वहाँ से निकलकर मेरे गाँव पहुँची। मुझे दुल्हे वालों की तरफ से देखकर सारे लोग चौंक गए। तब अंकिता के पति विशाल ने वहाँ पर सबको सारा माजरा समझा दिया। त्रिलोकी ने आगे बढ़कर मुझे गले से लगा लिया और बोला "भैया, मुझे माफ कर देना। मैंने तुम्हे कितना गलत समझा"। अंकिता भी रोते हुए बोली की "भैया। आप मेरे चचेरे नहीं, सगे भाई हो"। मेरे पिताजी ने भी मुझे आशीर्वाद दिया। आखिर में मेरी नजर मेरी पत्नी आरती पर पड़ी। वह गुस्से में मुझे देखे जा रही थी।

अंत में मेरे पास मेरा दामाद अजय आया। उसने मुझे गले लगाया और बोला "पापाजी। आप असली हीरो हैं। यू आर द बेस्ट।" उस दिन मुझे समझ आया कि अपना दामाद ही अपना होता है, बाकी तो सब सपना होता है। उस दिन से मेरा दामाद मेरा भगवान बन गया।

'वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयकर व अन्य लाभ'

वे. राजू, स. लेखा अधिकारी

जब हम वरिष्ठ नागरिक बनते हैं तो हम चाहते हैं कि हमारा जीवन आसान, सुरक्षित सरल हो। आयकार में वित्तीय लाभ के लिए आयकर विभाग ने इन लोगों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया है- एक वरिष्ठ नागरिक (60 से 80 वर्ष) और दूसरे अधिक वरिष्ठ नागरिक (80 वर्ष से अधिक)

1. 60 साठ वर्ष से ऊपर के वरिष्ठ नागरिक- वरिष्ठ नागरिकों को तीन लाख तक की आयकर से मुक्ति है।

2. 80 अस्सी वर्ष से ऊपर के वरिष्ठ नागरिक- अधिक वरिष्ठ नागरिकों के लिए कर की छूट पाँच लाख तक है।

3. स्वास्थ्य लाभ: आयकर विभाग स्वास्थ्य बीमा के लिए वरिष्ठ नागरिकों दवारा प्रीमियम के लिए धारा 80 डी के तहत पचास हजार रुपये तक की छूट प्रदान करता है।

4. वरिष्ठ नागरिकों के लिए सावधि-जमा (एफ़डी) में 0.5% से 1% की अतिरिक्त ब्याज दर से लाभान्वित किया जाता है।

5. वरिष्ठ नागरिक उच्च ब्याज दर और धारा 80 सी के तहत 1,50,000/- तक कर छूट के साथ वरिष्ठ नागरिक बचत योजना का लाभ उठा सकते हैं। वरिष्ठ नागरिक 'जीवन प्रमाणपत्र' के लिए जीवन प्रमाण प्राप्त कर सकते हैं, उन्हें बैंक को सूचित करना होगा कि वे जीवन

प्रमाणपत्र (डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट) के लिए पंजीकृत होना है और यह सेवा वरिष्ठ नागरिक के घर के दरवाजे पर उपलब्ध कराई होगी।

6. वरिष्ठ नागरिक बैंकों, डाकघर बचत खाते, सावधि-जमा (एफ़डी) और आवर्ती-जमा (आरडी) से अर्जित ब्याज पर धारा 80 TTB के तहत 50,000/- रुपये तक की कटौती पाने के पात्र हैं।

7. वरिष्ठ नागरिक को धारा 194 ए के तहत किसी भी बैंक या डाकघर द्वारा ब्याज के भुगतान से पचास हजार रुपये तक के स्रोत पर कोई कर नहीं काटा जाएगा।

8. वरिष्ठ नागरिकों को धारा 80 DDB के तहत किसी भी उपचार के लिए (विशेष/गंभीर बीमारी) वित्तीय वर्ष में एक लाख रुपये तक की कटौती मिलती है।

9. वरिष्ठ नागरिकों को धारा 207 के तहत अग्रिम कर का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है।

10. वरिष्ठ नागरिकों को धारा 16 (i) (ए) के तहत उनकी आय पर रु.50, 000/- की मानक कटौती की अनुमति है।

11. 80 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के लिए ई-फाइलिंग अनिवार्य नहीं है जिनके पास पांच लाख से अधिक आय दावा करने के लिए रिफ़ंड लेना है, वे पेपर मोड में भी रिटर्न फ़ाइल कर सकते हैं।

12. वरिष्ठ नागरिकों के लिए रिवर्स मॉर्टगेज के माध्यम से गृह संपत्ति का हस्तांतरण पूंजीगत लाभ या आय के किसी अन्य शीर्ष के रूप में स्वीकार्य नहीं होने से कर मुक्त है।

13. हालांकि वरिष्ठ नागरिकों के लिए उपरयुक्त आयकर लाभों व छूट के अलावा अन्य विशेष सहूलियत भी भारत सरकार द्वारा की गई है जिनका ज्ञान प्रत्येक वरिष्ठ नागरिक को करवाया जाना चाहिए ताकि सरकारी लाभों से वे वंचित न हों जैसे-

(i) पासपोर्ट के लिए वरिष्ठ नागरिकों को ऑनलाइन आवेदन करने की आवश्यकता नहीं है, वे किसी भी सेवा केंद्र में सीधे जा कर आवेदन कर सकते हैं।

(ii) यात्रा लाभ: पुरुष वरिष्ठ नागरिक को 40% और महिला वरिष्ठ नागरिक को भारतीय रेलवे में 50% टिकट रियायत के लिए पात्र हैं।

(iii) व्यावसायिक लाभ: अधिकांश बैंक (जहां पेंशनर का खाता है) कुल मासिक पेंशन के 50 गुना तक ऋण प्रदान करतें हैं, जो अधिकतम 75 लाख की सीमा के अधीन है।

हमारे कार्यालय में हिंदी की भूमिका

एम. रामास्वामी, स. लेखा अधिकारी

मैं सबको यह बताना चाहता हूँ कि हमारे कार्यालय में हिंदी ने कितनी प्रगति की है! मन की बात अब होने दो। लगभग पंद्रह वर्षों तक हिंदी अंत्याक्षरी कार्यक्रमों का आयोजन करने का सौभाग्य मुझे इस कार्यालय में प्राप्त हुआ। हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान पिछले बीस वर्षों से इस कार्यालय में हिंदी सुगम संगीत कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। हिंदी अनुभाग के कर्मचारियों ने हमारे प्रयासों में बहुत सहयोग दिया है। जहाँ तक राजभाषा का सवाल है, दो वर्ष पूर्व महालेखाकार महोदय के सुझाव पर हिंदी में बातचीत को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी वार्ता-कक्षाओं की व्यवस्था इस कार्यालय में शुरू की गई थी जिसका प्रभाव पड़ा कि छोटी-मोटी हिंदी हिंदी नहीं जानने वाले कार्मिक भी सीख गए हैं।

'अमृत' इनहाउस गृह पत्रिका का शुभारंभ कर्मचारियों के लिए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए एक और बढ़िया मंच है। हिंदी के दैनिक प्रशासनिक उपयोग के संबंध में इंट्रानेट में पोस्ट इस कार्यालय में एक और सुदृढ़ पहल है जो कार्मिकों के दैनिक हिंदी ज्ञान को समृद्ध करती है। यदि आपका जहाज सागर के बीच में डूबता है तो आपको तैरना आना आपके हित में है। यदि आप बीमार पड़ते हैं तो दवा खाना ही आपके हित में है। अगर आप बरसात में फँसे हैं तो अपना छाता खोलना ही आपके हित में है। ठीक इसी तरह अगर हिंदी में किया गया काम आधिकारिक काम है तो हिंदी सीखना आपके हित में है। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि हिंदी ने मुझे आज तक इस कार्यालय में बहुत सम्मान दिया है। मेरी राय में हिंदी सीखना आसान है और सम्मानजनक है। समय के साथ हालात बदल जाते हैं और बुद्धिमान व्यक्ति इस बदलाव में खुद को बदल लेते हैं। जैसे महात्मा गांधी ने कहा था, वैसे ही बदलाव आप खुद बनिए जो बदलाव आप अपने आसपास देखना चाहते हैं। हिंदी में अपने काम का आनंद लें, नई चीजें सीखें और आगे बढ़ते रहें।

नई दुनिया की सैर

विद्या जनार्दन, स. लेखा अधिकारी

इन दिनों विदेश जाना काफी आम और आसान हो गया है, और मुझे भी ऐसा करने का अवसर मिला है। मुझे भी गगनचुंबी इमारतों के शहर न्यूयॉर्क की यात्रा करने का अवसर मिला- भाग्यशाली हैं वे जो बहुत यात्रा करते हैं। उन्हें जो समृद्ध अनुभव प्राप्त होता है वह न केवल उन्हें जीवन के नए तरीकों की खोज करता है बल्कि उन्हें समझदार भी बनाता है। मैं बहुत उत्साहित थी क्योंकि यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी।

हम चेन्नई हवाई अड्डे पर पहुंचे। उड़ान समय पर थी और मै टेकऑफ का इंतजार कर रही थी। टेकऑफ करने से पहले पायलट अपना परिचय दे रहा था और हमारे सुखद यात्रा की कामना कर रहा था। उसके बाद एयर होस्टेस ने हमें सुरक्षा नियमों के बारे में बताया। इंट्रोडक्शन सेशन दोनों हिंदी और अंग्रेजी में थे इसलिए इसे समझना आसान था। अब समय आ गया... पहले तो प्लेन विपरीत छोर तक दौड़ता चला गया और पूरे समय मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं बस में बैठी हूँ। रन-वे पर कुछ दूरी तय करने के बाद अब हवाई जहाज़ धीरे-धीरे आसमान की बुलंदी की ओर बढ़ रहा था और अंत में इसने एक मोड़ लिया और गति तेजी से बढ़ गई। कुछ ही समय बाद वह आकाश में बादलों के ऊपर उड़ाने लगा था, कुछ ही सेकंड में हम आकाश की ऊँचाई पर थे। नज़ारा दिल दहला देने वाला था। सड़कें, इमारतें, खेत सब कुछ खिलौनों जैसा लग रहा था। वास्तविक शहर एक शहर के खिलौने के मॉडल जैसा दिखता था। जब विमान ने ऊंचाई बढ़ाई तो मेरे कान शुरू में गुनगुना रहे थे, लेकिन बाद में सब कुछ ठीक था। चार घंटे में हम अबुधाबी पहुँच गए। हमें अबुधाबी से दूसरी उड़ान भरना था। अबुदाबी में अमेरिकी अधिकारियों द्वारा हमारी फिर से सुरक्षा जांच की गई। अबु धाबी से न्यूयॉर्क के लिए 15 घंटे की उड़ान थी। उड़ान समय पर थी, मैं डबल डेकर हवाई जहाज को देखकर दंग रह गई, ऊपरी डेक पर जाने के लिए सीढ़ियां थीं।

हर सीट के आगे टीवी हैं जहां हम अपनी पसंद का कार्यक्रम देख सकते हैं। हम न्यूयॉर्क पहुँच गये। अब हमें पुनः अपनी सुरक्षा पेटियों को बांधने के लिए कहा गया। हवाई जहाज ने रन्वे की पट्टी को छुआ तो हम सभी को हल्का सा झटका महसूस हुआ जिसके कुछ समय बाद जहाज रुक गया।

यह शहर दुनिया के सबसे बड़े प्राकृतिक बंदरगाह पर स्थित है। इसमें ब्रुकलिन, क्वींस, मैनहट्टन, ब्रोंक्स और स्टेटन द्वीप नामक पांच क्षेत्र शामिल हैं। न्यूयॉर्क की सड़कें बहुत व्यस्त थीं। न्यूयॉर्क में सात एवेन्यू हैं जो एक छोर से दूसरे छोर तक चलते हैं। इन एवेन्यू को पार करने वाली सड़कें थीं जो संख्यांकित हैं। न्यूयॉर्क में सभी लोग अंग्रेजी बोलते हैं लेकिन अन्य भाषाएं भी बोली जाती हैं। न्यूयॉर्क एक ऐसी जगह है जहां सभी देशों के लोगों ने अपना घर बनाया है। अधिकांश अश्वेत अमेरिकी हार्लेम नामक जिले में रहते हैं। मैंने पाया कि अमेरिका में लोग समय बचाने के लिए बहुत जागरूक हैं। न्यूयॉर्क में सभी लोग इतने व्यस्त हैं कि वे हमेशा चलतेफिरते दिखते हैं। सभी घर और अपार्टमेंट इतनी अच्छी तरह से बनाए हुए हैं कि वे नए जैसे अच्छे लगते हैं। आप शायद ही कोई इमारत देख सकते हैं जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हो। कचरा हटाने की व्यवस्था भी इतनी नियमित और सुनियोजित है कि ओवरफ्लो होने वाले कूड़ेदान दृष्टि दुर्लभ है। न ही हम गायों को सड़कों पर घूमते हुए देख सकते हैं, वास्तव में शहर के बाहरी इलाके में खेत हैं। आप हरे-भरे खेतों को उचित बाड़ के साथ देख सकते हैं और अच्छी स्वस्थ गायों को उनके भोजन का आनंद लेते हुए देख सकते हैं।

डबल डेकर बस में न्यूयॉर्क की यात्रा करना बहुत रोमांचक है। बस की छत में पर्यटकों के बैठने और न्यूयॉर्क शहर का आनंद लेने के लिए सीटें हैं। बस एक एवेन्यू से एवेन्यू रास्तेपर जाती है और आपको शहर का नज़ारा देखने के लिए ले जाती है। कोई भी किसी भी पड़ाव पर उतर सकता है और किसी अन्य स्थान पर जाने के लिए किसी अन्य पर्यटक बस में सवार हो सकता है। यह बहुत सुविधाजनक है क्योंकि आपको केवल एक बार टिकट खरीदना होता है और इसे पूरे दिन इस्तेमाल किया जा सकता है। आपको एक ही बस में यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है। बसों में कंडक्टर नहीं हैं और बुजुर्गों और विकलांगों के लिए उन्हें बाधा मुक्त बनाया गया है। जब चालक किसी विकलांग व्यक्ति को देखता है, तो वह बस को रोक देता है और उसे बस में चढ़ने में मदद करता है। बसों को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि विकलांग व्यक्ति भी अपनी व्हील चेयर में आसानी से बस में प्रवेश कर सकता है। मैंने इसे भारत के विपरीत पाया जहां ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। न्यूयॉर्क एक बहुत ही दिलचस्प जगह है और यहाँ एक को स्टेचू ऑफ़ लिबर्टीको अवश्य देखना चाहिए जो समुद्र के अंदर सीना तानकर खड़ा है। यह इतना राजसी और शानदार दिखता है कि इसे बनाने वाले मूर्तिकार के बारे में सोचने पर मजबूर हो जाता है। यह वास्तव में एक अद्भुत दृश्य है और यह न्यूयॉर्क को अपनी एक पहचान देता है। इस प्रतिमा ने उन लाखों

शरणार्थियों का स्वागत किया जो जहाज से अमेरिका आए थे। यह संयुक्त राज्य अमेरिका की सामाजिक समानता का प्रतीक है।

वहीं टाइम्स स्क्वायर एक ऐसी जगह है जहाँ हर पर्यटक जाना चाहता है इसका नाम अखबार "द टाइम्स" के कारण रखा गया था, जिसे वर्ष 1904 से वहां रखा गया है। हमेशा बहुत सारे लोग होते हैं और इसकी वजह से कुछ खास माहौल होता है। हमने सेंट्रल पार्क का दौरा किया और यह न्यूयॉर्क की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है। हम आधुनिक कला संग्रहालय भी गए। यहां आपको आधुनिक कला की ढेर सारी तस्वीरें देखने को मिलेंगी। हम ब्रुकलिन ब्रिज गए। यह वर्ष 1833 में बनाया गया था और ब्रुकलिन को मैनहट्टन से जोड़ता है। शाम के समय यह देखने लायक जगह हैं। हमने ब्रुकलिन बॉटैनिकल गार्डन का भी दौरा किया। हम कोनी आइलेंड गए। मैं समुद्र तट की साफ सुथरा नजारे को देखकर स्तब्ध हो गई। फिर हमने न्यूयॉर्क मेट्रो में यात्रा की। न्यूयॉर्क सिटी सबवे स्टेशनों की संख्या के हिसाब से दुनिया में सबसे बड़ा रैपिड ट्रांजिट सिस्टम है, जिसमें 472 स्टेशन ऑपरेशन में हैं। स्टेशन मैनहट्टन, ब्रुकलिन, क्वींस और ब्रोंक्स में स्थित हैं। मैं मॉल का दौरा करने के लिए गई और यह देखकर हैरान रह गई कि वे अपने आप में शहर थे, जहां एक व्यक्ति कई घंटे व्यतीत कर सकता हैं। कहने की जरूरत नहीं है कि मॉल संस्कृति भी भारत में लोकप्रिय हो रही है लेकिन हमें अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना बाकी है, जब हम उनकी तुलना विदेशों में मॉल से करते हैं। बिना सेल्स गर्ल्स के इसके बारे में कोई उपद्रव किए, कोई भी मॉल से खरीदी गई किसी भी चीज का आदान-प्रदान या वापस कर सकता है।

राष्ट्रीय 9/11 स्मारक और संग्रहालय देखने लायक है। स्मारक में दो समान स्मारक शामिल हैं (डब्ल्यूटीसी उत्तर और दक्षिण टावरों का प्रतिनिधित्व करते हुए) एक पार्क में जनता के लिए खुला है। देखने लायक एक और जगह है मेट्रोपॉलिटन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट प्रत्येक स्मारक की परिधि को घेरने वाले कमर-ऊँचे धातु के पैनलों में मृतकों के नाम प्रमुखता से उकेरे गए हैं। पैनल गिने जाते हैं, प्रत्येक में लगभग बीस नाम शामिल होते हैं। सबसे अच्छी चीज जो मुझे अच्छी लगी वह थी गर्मजोशी और लोगों का व्यवहार, जिनसे मैं मिली, यहां तक कि अजनबियों ने भी मुस्कान के साथ हमारा स्वागत किया और शुभकामनाएं दीं। मैंने शायद ही कोई उदास चेहरा देखा हो और किसी ने भी कतार नहीं तोड़ी। अनुशासन अद्भुत था! हर कोई कूड़ेदान, गलियों, मॉल, स्टेशनों का इस्तेमाल कर रहा था; बस स्टॉप सभी साफ-सुथरे थे, हालांकि बहुत सारे लोग घूम रहे थे। विदेश में हर चीज देश की प्रगति, विकास और अनुशासन को दर्शाती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि न्यूयॉर्क वास्तव में एक महान शहर है जहां सभी देशों और विभिन्न धर्मों, जातियों के लोग शांति और सद्भाव से रहते हैं। न्यूयॉर्क वह शहर है, जो कभी नहीं सोता। वास्तव में मैं आज भी इस सुखद यात्रा को भूल नहीं सकती.. यह एक सपने की तरह था। हम 20 दिनों के दौरे के बाद भारत लौटे।

कूप-मंडूक

ई. के. नटराजन, स.लेखाधिकारी

क्या आपको पता है, मैं किस विषय में बात करने जा रहा हूँ? कोरोना वाइरस के बारे में जिसकी वजह से विश्व में स्वास्थ्य संकट गहराता जा रहा है। जिसकी वजह से लॉकडाउन संसार का एक नया नियम बन गया है। इस दौरान अनेक जगह घर से काम करना पड़ रहा है जिसके फ़ायदों के साथ कई नुकसान भी देखने में आए हैं, जो इस प्रकार हैं-

नौकरशाही को फायदे-

आजकल की भागदौड़ की जिंदगी में अगर सारा काम घर बैठे होता है तो ये किसी वरदान से कम नहीं है क्योंकि आप पैसे भी कमा सकते हैं और घर वालों का साथ भी। घर पर आराम के साथ-साथ कहीं आने जाने का झाड़ा नहीं लगता और घर पर बीवी और दफ्तर दोनों को साथ-साथ संभाल सकते हैं। काम भी बेहतर होता है और जीवन में संतुलन भी रहता है। भीड़ और यातायात की आफत से छुटकारा तो मिलता ही है साथ ही पैसे की भी बचत होती है। और सबसे बड़ा फायदा ये होता है कि नियमित छुट्टियाँ बच जाती हैं उनकी जरूरत नहीं पड़ती है।

नुकसान- इससे अलगाव बढ़ता है और काम अधिक करने का जोखिम बढ़ा है। एक अध्ययन के अनुसार घर से काम शुरू होने के बाद लोगों का कोलेस्ट्रॉल बढ़ा है और घर में तकरार बढ़ी है और आपसी खिंचाव कम हुआ है। इस समय कार्य स्थल से व्यक्ति दूर रहता है तो आपसी अंतरंग बातें मित्रों से शेयर नहीं हो पाती जिससे परिवारों में तनाव बढ़ा है। इन सब के साथ मजे की बात तो ये है कि लोग यह मानने को तैयार ही नहीं कि आप घर से कुछ काम भी करते हैं। घर से काम के दौरान दफ्तरों में काम करने वाले अस्थायी स्टाफ या टेंडर पर काम करने वाले चतुर्थ श्रेणी की सेवाओं की जरूरत खत्म हो जाती है जिससे बेरोजगारी बढ़ी है।

छात्र वर्ग को फायदे-

लॉकडाउन ने आलसी छात्रों और पढ़ाई से दूर भागने वाले बच्चों की बल्ले-बल्ले कर दी है। छोटे बच्चों को अभिभावकों की बदले दौर की बदली मानसिकता की वजह से परिजनों के साये से दूर रहना पड़ता था क्योंकि सभी उसे नैसर्गिक बचपन जीने देने के शत्रु बने हैं और जल्द से जल्द पढ़ाई पूरी करवाके कलेक्टर बनाने पर तुले हैं। लॉकडाउन का आभार कि इस बार की नई पौध अपनों के भरपूर साए में रही और माता-पिता के अटूट प्रेम से वंचित नहीं हुई। इस बात को कम ही अभिभावक समझ पाए हैं और अनेक तो स्कूल जल्द से जल्द खोल डालने की कुतर्क पूर्ण पैरवी भी करते नजर आते हैं तो कुछ सरकार को कौसते दिखते हैं।

छात्र वर्ग को नुकसान-

ऑनलाइन कक्षाओं का झमेला और पाठ्य सामाग्री समझ नहीं पाना तो समस्या रही ही साथ ही शारीरिक गतिविधियां भी प्रभावित रही। नई पीढ़ी जो खेल स्कूलों में भौतिक रूप से खेल सकती थी उनका स्थान मोबाइल के आभासी गेम्स ने ले लिया है और शिशु अवस्था के बच्चे तो समझ ही नहीं पा रहे की खेल एक-दूजे की उपस्थिति में खेलना कितना आनंददायी होता है ! पूरे दिन मोबाइल के साथ अधिक वक्त बिताने अथवा परिजनों द्वारा कम ध्यान दिए जाने की अवस्था में बच्चे चिड़चिड़े हो रहे हैं अतः बच्चों को वक्त दें, मोबाइल नहीं।

नुकसान से बचने के उपाय-

बच्चा हो चाहें, वयस्क या बुजुर्ग, मोबाइल बच्चों के चिंतन के तरीके को दूषित करने के साथ-साथ उनकी नेत्र-ज्योति को समाप्त कर रहा है। इसी दर से बच्चे मोबाइल के चिपके रहे तो सात-आठ वर्ष की उम्र में ग्लास चढ़वा लेंगे और चालीस पकड़ने तक पूर्ण रूप से दृष्टि हीन हो चुके होंगे। बच्चों को समय दें, मोबाइल नहीं। मोबाइल से दूरी आपके सुनहरे भविष्य के लिए जरूरी है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो बच्चे ही नहीं मोबाइल से चिपके रहने वाले बड़े भी कूप-मंडूक बन जाएंगे क्योंकि कम बातचीत और चिंतन शक्ति की कमी व्यक्ति के मस्तिष्क को शब्द-विहीन कर देती है जिससे वह बोलचाल में शब्दों की कमी से जूझता है और धीरे-धीरे कूप-मंडूक बन जाता है। मोबाइल गेम के बजाए उन्हें शारीरिक व्यायाम या गेम्स करवाएँ। जरूरत पड़े तो आप खुद उनके साथ खेल सकते हैं, इससे नुकसान न होकर आप स्वयं को जीवंत महसूस करेंगे। स्वयं भी खाली समय में किताबें पढ़ें और बच्चों को भी पढ़ाएँ। इसके अलावा नृत्य भी किया जा सकता है। यदि आप ज्यादा बुजुर्ग हैं तो बच्चों को नृत्य सीखा सकते हैं और उनका नृत्य देख भी सकते हैं। योगासन और ध्यान आपका और बच्चों का चिड़चिड़ापन दूर करेगा। स्वयं को प्रकृति के निकट ले जाएँ और बच्चों को भी सिखाएँ कि ये भी एक सजीव दुनिया है जिसके बिना हमारे जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है और उन्हें पैड लगाना और उसे पानी देकर पालना सिखाएँगे तो बच्चे में और आप में ज़िम्मेदारी की भावना तो बढ़ेगी ही परार्थ सोचने कि शक्ति का भी विकास होगा। स्वयं और बच्चों को पशु-पक्षियों की दुनिया के भी निकट ले जाएँ ताकि उस दुनिया के प्रति हमारे मन में रहम और अपनापन बढ़े और हम सीख पाएँ कि इन्हें कैद में रहना कितना अखरता होगा? इसकी तुलना हमारी लॉकडाउन के दरमियाँ घरों में कैद रहने की मजबूरी से करके देखें। जितनी हमे मुक्त हवा में घूमने की चाहत हई उतनी ही पशु-पक्षियों को हई। उन्हें पालने के नाम पर घरों में कैद न करें। बड़ा सोचें और न केवल सोचें उसे जीवन में भी उतारें ताकि आप और भावी पीढ़ी कूप-मंडूक होने से बच सके। ऐसा करके आप न केवल खुद पर या अपने बच्चों पर बल्कि सृष्टि पर उपकार कर रहे होंगे।

हमारा गौरव

बी. जूलियट विमला, स. लेखा अधिकारी

संसार में जन्म लेने के साथ ही जातक को नाम मिलता है और उसी के साथ पिता का नाम भी मिलता है। बहुतायत के मामलों में संतति पिता के नाम से जानी जाती है लेकिन कुछ भाग्यशाली लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें संतति के कारण गौरव, यश, कीर्ति और ख्याति मिलती है और साथ ही मिलते हैं अनेक सुनहरे अवसर। ऐसे ही एक किरदार मेरे कार्यालय में हैं। जी हाँ, मैं बात कर रही हूँ व लेखाकार श्रीरामभद्रन के पुत्रश्री सुनील गार्गियन की जिन्होंने परिवार की ख्याति फैलाने के साथ उन्हें विश्वभ्रमण का अवसर दिया।

इनकी जन्म तिथि: 9 मई 1995 है और शिक्षा: बी.कॉम और एमए संस्कृत है, वतर्मान में ऑल इंडिया रेडियो में 'ए' ग्रेड के वक्ता हैं। इनके गुरु: पद्मभूषण और संगीत कला आचार्य श्री पीएस नारायणस्वामी एवं श्री पीबी श्रीरंगचारी एवं श्री एस बश्याममुप्टो है। इन्होंने 3 साल की उम्र से कर्नाटक संगीत सीखना शुरु किया। अगस्त 2000 में इंटरनेट चैनल NUM टीवी के लिए 5 साल की उम्र में अपना पहला प्रदर्शन दिया जिसे बड़ी लोकप्रियता मिली और 2005 से केंद्र सरकार छात्रवृत्ति (सीसीआरटी) प्राप्त होने लगी। इन्हें मिली प्रशंसा और पुरस्कार में बहुत से अलंकरण शामिल हैं। सुनील ने कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया है और तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक राज्यों और मुंबई में कई प्रतिष्ठित सभाओं में प्रदर्शन करते रहे हैं। 2012 से, सुनील चेन्नई में दिसंबर संगीत सत्र के दौरान नियमित रूप से प्रदर्शन कर रहे हैं। उनकी उपलब्धियां इस प्रकार हैं-

(1) संगीत अकादमी मद्रास से उनके 93वें वार्षिक सम्मेलन और संगीत - 2019 में सर्वश्रेष्ठ पल्लवी पुरस्कार प्राप्त किया

(2) 7 दिसंबर 2019 को भारत के ट्रिनिटी कला महोत्सव से 'इसाई रसायन' और 14 दिसंबर 2019 को भारत कलाचर से 'युवा कलाभारती' सम्मान से सम्मानित हुए।

(3) कार्तिक फाइन आर्ट्स द्वारा उनके दिसंबर संगीतसत्र 2018 में इसाई चूड़र से सम्मानित किया गया।

(4) संगीत अकादमी मद्रास द्वारा अपने 92वें वार्षिक सम्मेलन और संगीत - 2018 में 'सर्वश्रेष्ठ पुरुष गायक' घोषित किए गए।

(5) दिसंबर संगीत सत्र 2018 में नारद गण सभा से सर्वश्रेष्ठ गायन के लिए प्रोफेसर महालिंगम एंडोमनेट पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(6) फरवरी-18 में नंदलाल गंधर्वगणसभा ने 'नंदलला गंधर्वगणचूड़' की उपाधि से सम्मानित किया।

(7) 2014 में हिंदू सारेगामा एमएस सुब्बुलक्ष्मी पुरस्कार जीतने के लिए जनवरी-16 में महाराजा स्वाति थिरुनल की कृतियों की 'पद्मनाभ प्रभावम' नामक इनकी पहली ऑडियो सीडी का विमोचन हुआ।

(8) संगीत अकादमी, मद्रास द्वारा "सर्वश्रेष्ठ पुरुष गायक (जूनियर)" घोषित किया गया अपने 89वें वार्षिक सम्मेलन और संगीत-2015 में।

(9) द हिंदू सारेगामा एमएससुब्बुलक्ष्मी अवार्ड 2014 (वॉयस ऑफ द ईयर) अक्टूबर में घोषित किया।

(10) 2014 में संगीत अकादमी की एचसीएल कॉन्सर्ट श्रृंखला में "सर्वश्रेष्ठ संगीत कार्यक्रम दिया।

(11) "अगस्त 2014 में श्री कृष्ण गणसभा चेन्नई से महाराजापुरम संथानम पुरस्कार उनकी 2013 की गोकुलाष्टमी श्रृंखला में उनके योग्य प्रदर्शन के लिए दिया गया।

(12) जुलाई 2014 में गयाना समाज, चिंतामणि, कर्नाटक द्वारा नाधा चिंतामणि पुरस्कार मिला।

(13) थंब्रास (तमिलनाडु ब्राह्मणसंघ) चेंगलपट्टू ने मार्च 2014 में संगीत युवा सम्राट घोषित किया।

(14) 2013 में द म्यूजिक एकेडमी, मद्रास आयोजित स्पिरिट यूथ सीरीज में सर्वश्रेष्ठ पुरुष गायक

(15) 2013 में श्री त्याग ब्रह्म गण सभा (वाणी महल) द्वारा "सर्वश्रेष्ठ पुरुष गायक" (जूनियर श्रेणी) प्रदान किया गया

(16) "भारत रत्न एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी फैलोशिप" शनमुखानन्द सभा, मुंबई से सितम्बर 2013 से सितम्बर 2015 तक 3 वर्षों के लिए प्राप्त की।

(17) जनवरी 2013 में वीडीएस कला अकादमी द्वारा "बाला भास्कर" सम्मानित किया गया

(18) श्रीकृष्ण गण सभा से दिसंबर 2012 के संगीत सत्र में योग्यता के योग्य प्रदर्शन के लिए 'मुसिरी सुब्रमण्यम अय्यर बंदोबस्ती पुरस्कार' प्राप्त किया

(19) 2012 में कुल 53 पुरस्कार- चेन्नई के दिसंबर संगीत समारोह के संबंध में आयोजित संगीत प्रतियोगिताओं में 30 पुरस्कार जीते, जिनमें से 18 प्रथम, 7 दूसरे और 3 तीसरे पुरस्कार और त्रिची आरआर सभा की वार्षिक प्रतियोगिता में 26 में से 23 पुरस्कार जीते।

(20) 2011 में तीन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान हासिल कर 3 तानपुरे जीते।

(21) वर्ष 2007 में रिलायंस मोबाइल कर्नाटक संगीत छात्रवृति जीती।

(22) सितंबर 2004 में रोटरी क्लब ऑफ मद्रास की ओर से यंग अचीवर अवार्ड मिला।

(23) ढाई महीने केलिए युएसए व कनाडा का दौरा और 19 संगीत कार्यक्रम दिए हैं (मार्च-जून 19)

(24) 2018 और 2019 में क्लीवलैंड त्यागराज आराधना महोत्सव में भाग लिया।

इनमें से अधिकांश में इन्हें सपरिवार संस्था के खर्च पर निमंत्रित किया गया जिसकी बदौलत यह अपने परिवार को देशाटन ही नहीं विश्वाटन कराने में भी सफल रहे। हमें गर्व है सुनील पर।

बच्चे बनकर काटें 'लॉक-डाउन'

मीना पूनम ज्योति एक्का, व. लेखाधिकारी

हिन्दी सिनेमा में एक गीत आया था जो बड़ा लोकप्रिय हुआ था जिसके बोल कुछ यूँ थे- 'गिव मी सम सनशाइन, गिव में सम रेन, गिव मी अनादर चांस, आय वांना ग्रो अप वन्स अगेन'... 'सारी उम्र हम मर-मर के जी लिए एक पल तो अब हमें जीने दो जीने दो'... 'बचपन तो गया, जवानी भी गयी, एक पल तो अब हमें जीने दो जीने दो... ये गाना लंबे समय तक सुना और गुनगुनाया गया क्योंकि हर किसी के दिल की चाहत होती है कि वो एक बार अपने को खुल के जिए, ठीक वैसे ही जैसा बचपन में जिया था। चूंकि अब हम सयाने हो गए हैं। सयाने ही नहीं जैसा कि मुंबइया लेंगवेज़ में लोकप्रिय है कि 'डेढ़ स्याणे, हो गए हैं और मशीनी जिंदगी जीने लगे हैं।

लेकिन हम बच्चा होना चाहते हैं क्योंकि असली खुशी उसी में है। आज हम जानते हैं कि बड़ों की डाट हमें सुधारने के लिए होती है अतः हम सही हैं। आज हमे माँ-बाप की वो झिड़कियाँ मीठी लगती हैं जो कभी हमने सुनी थी इसलिए हम वापस बच्चे होना चाहते हैं। हम बात-बात पर रूठना चाहते हैं पर हमें कोई मनाता नहीं है, इसलिए हम बच्चे हो जाना चाहते हैं। बच्चे को मनाने के लिए सबकी कौशिश रहती है लेकिन हम भूल जाते हैं कि बचपन और रूठने-मनाने के लिए बच्चे का स्वभाव होना जरूरी है तभी बचपन का आनंद मिलेगा और हम सदा बचपन को एंजॉय कर सकेंगे। तभी हमारे रूठने पर हमें कोई मनाने को राजी होगा। छोड़ दीजिए अपने अहंकार को और बालस्वभाव विकसित कीजिए। तभी जी पाएंगे सर्दी की ठिठुरन के आनंद को। तभी हम महसूस कर पाएंगे अलाव के पास बैठ कर मिलने वाली गरमाहट को। फिर गढ़ढ़े में भरे पानी को तालाब समझ दौड़ाइए उसमें जहाज।

आज हम वापस बच्चे होना चाहते हैं। बारिश के मौसम की मस्ती, तालाब समझ गड्ढों में तैराना कश्ती बड़ा आनंद देती है। चमक-दमक से ऊब चुके हैं तो वही बचपन वाला सादगी भरा जीवन अच्छा लगता है और दुबारा चाहते हैं वही दौर वापस आए। कहते हैं सच्चे मन से की गई ख्वाहिशे और दुवाएँ पूरी होती है। देर से ही सही वो दौर कुछ समय के लिए आया था, बस हमने हो सकता है समझने में देर कर दी हो। ये एक चमत्कार ही था कि हम बचपन को वापस जी सकें ऐसा दौर आया जो सपने में भी संभव नहीं था वो हकीकत में देखने को मिला। भगवान का आशीर्वाद रहा कि हम समझ सके कि ये वक्त आ गया है बचपन को फिर से जीने का। सारे जहाँ में सन्नाटा छा गया। जैसे बच्चा हर किसी से ड़र जाता है वैसे ही हम भी डरे सहमे से रहे। चूँकि अब हम सयाने हो गए हैं इसी कारण जिंदगी की जद्दोजहद में खो गए हैं। जिंदगी में भागते-भागते हम खुद मशीन बन गए हैं। मशीनी रफ्तार से चलती जिंदगी में अपने-आप ही बचपन की याद सताने लगती है क्योंकि तब हमारी समस्याओं को देखने के लिए हमारे माता-पिता होते हैं। संभव है उन्होंने भी अपने बचपन को जीने की ख़्वाहिश लिए हमारी खुशियों को पूरा करते हुए अपनी खुद की ख़्वाहिशों की बलि दी होगी। ताकि हम

पर कोई बोझ न पड़े। अब वे नहीं हैं तो उनकी ज़िम्मेदारी हम पर आ पड़ी और दिल चाहने लगा कि बच्चे बन जाएँ।

याद है बारिश में बिजली की कड़कड़ाहट और डरकर अपने घरों में सिमटे रहना। ठीक ऐसा ही डर एक बार फिर जहाँ में छा गया। घरों में वाइरस की गड़गड़ाहट ने दुबके रहने को विवश कर दिया। अचानक लम्हा थम सा गया। अपने को दुनिया के दादा कहने वाले देशों ने घुटने टेक दिए। उनके रहनूमा बेबस नजर आए और अपने लोगों की मौत को हताश होकर देखने के सिवा कुछ न कर सके। उम्मीद की कहीं कोई किरण नजर नहीं आ रही थी। जो दूर फंसे थे वो अपनों के दीदार को तरसने लगे। कई हाथ दुवाओं में उठे तो अनेक लोगों की भलाई में डटे। तो कुछ ऐसे भी शैतान थे जो इस अवसर पर बेबस लोगों की जेब काटने में जुटे। लोगों में दूरियाँ बढ़ी। अनेक अपनों ने अपने असली चेहरे भी दिखाए। पर ऐसे दौर में कई इंसान भी जिंदा थे जो औरों के काम आए। कहीं इंसानियत शर्मसार हुई तो कहीं जागी भी। कइयों के घर उजड़ गए तो कई मीलों चलते-चलते जीवन की आश में काल-कालवित हो गए। बड़ा विनाशकारी दौर चला अजीब सा मंजर था चरो और दर्द और मायूसी थी। चारों तरफ से लाचारी की खबरे सुनसुन कर निराश हो गए थे।

लेकिन इन सब के बीच धरती को साँस लेने का मौका भी मिला और हमें भी सोचने का मौका मिला कि 'हर पल यहाँ खुल के जियो, जो है समा कल हो न हो'। भगवान का आशीर्वाद रहा कि हम समझ सके कि ये वक्त आ गया है बचपन को फिर से जीने का। हमने जिंदगी को एक अलग अंदाज में जीना शुरू किया। बंद घर में जो कुछ उपलब्ध था उसी का भरपूर आनंद लेने शुरू किया। जिंदगी की कसमकश में उस तरफ कभी ध्यान ही नहीं जाता कि बच्चों के रूप में कुदरत हमें अनमोल तोहफे देती है जिनकी खिलखिलाती अनमोल हँसी में डूबकर अलग ही दुनिया में पहुंचा जा सकता है। जब ये समझ आ जाए तो हर रोज कुछ नया करने और नया सीखने की होड लग जाती है। कभी कविताओं की महफिल तो कभी किस्से कहानियाँ। कभी खेल तमाशा तो कभी बेकार चीजों से खास बना डालने की कारगुजारियाँ। हमारे अंदर का अहंकार सो गया और बच्चा जाग गया। साथ ही पाठशाला और दफ्तर दोनों ही ऑनलाइन हो गए। जब ऑनलाइन क्लास शुरू होती तो बच्चों के साथ स्कूल जाने लगे और ऑनलाइन दफ्तर शुरू होता तब उसे निपटा दिया कुल मिलकर प्रेसर किसी का नहीं रहा जो पहले आ पड़ा पहले उसे ही निपटा दिया। न बच्चों को शिकायत और न दफ्तर को। शिक्षकों के प्रश्नों के उत्तर बच्चों से पहले हमारे मुख से निकलने लगे। संगीत की क्लास में में पर्दे के पीछे हमारे भी पाँव थिरकने लगे। दुनिया से कटे भी नहीं शाम को वक्त मिलते ही पड़ौसियों से न्यूज बुलेटिन ऑन कर लेते तो कभी रिश्ते-नाते वालों को हौंसला देते। धीरे-धीरे सब कुछ ठीक होता गया। गली-बाजार खुलने लगे थे। जन-जीवन चलने लगा था। हम ठो-थोड़ा बाहर निकालने लगे। घरों के आँगन फिर से रंगोली से सजाने लगे। जिंदगी धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ने लगी जो धीरे-धीरे हमें भी अपने बहाव में बहाने लगी थी। मन में खुशी थी लेकिन दुख भी था कि उसके साथ हमारा बचपन वापस खो गया था।

सिनेमा और समाज

मोहम्मद हबीब नवाज, लिपिक

आधुनिक काल में जीवन बहुत व्यस्त हो गया है। व्यक्ति की आवश्यकताएँ बहुत बढ़ गई हैं। काम कुछ नहीं पर समय किसी के पास नहीं है। हाँ, मनोरंजन के नाम पर मोबाइल चलाने और यू-ट्यूब आदि में सिनेमा देखने के लिए सबके पास समय ही समय है। खाने के बिना व्यक्ति दो दिन रह लेगा लेकिन मोबाइल और सिनेमा देखे बिना नहीं रह सकता है। ये एक मेनिया में रूपांतरित हो चुका है। केवल सिनेमा की बात करें तो यह सामाजिक आलोचक के रूप में रचनात्मक भूमिका निभाता है। जब ये उत्कृष्ट या निकृष्ट चरित्रों को पेश करता है तो उनकी तुलना होती है तब लोगों में उच्चता की भावना जागृत होती है।

ऐतिहासिक घटनाओं को पर्दे पर देखकर किताबों की बजाए सरलता से थोड़े समय में अधिक ज्ञान हो सकता है। सिनेमा में आसपास के राज्यों की सामाजिक व्यवस्था, संस्कार और लोगों के व्यवहार को पर्दे पर देखकर हम वहाँ के चाल-चलन को आसानी से समझ सकते है जो भूगोल की पुस्तकों को पढ़कर ग्रहण करना मुश्किल है। हमें सदैव ये स्मरण रखना चाहिए कि कोई भी व्यवस्था स्वयं में न अच्छी होती है और न ही बुरी। उसका अच्छा या बुरा होना उसके उपयोग या दुरुपयोग पर निर्भर करता है। यदि सिनेमा का मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान के प्रसार के लिए किया जाता है तो ये बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सिनेमा के निर्माणात्मक या रचनात्मक पहलू का विस्तार बहुत हद तक सेंसर बोर्ड की भूमिका पर निर्भर है। यदि वहाँ सही निर्णय लेने वाली मशीनरी बैठे तो इसका बहुत लाभ होगा। उसे चाहिए कि द्विअर्थी अथवा सस्ती लोकप्रियता चाहने वाले संवादों का चलचित्र जो बच्चों या समाज पर ऋणात्मक असर छोड़ने वाली हो उस सामग्री को प्रसारित होने से रोके। दर्शक स्वभाव से कहानी के महानायक का अनुसरण किया करते हैं अश्लील या दुष्प्रभाव छोड़ने वाली सामग्री की समझ शक्ति वाले लोगों को सेंसर बोर्ड में नियुक्त किए जाएँ जो स्वयं और निर्माताओं के हित से परे समाज के हित का चिंतन करते हों ताकि समाज को बर्बाद होने से बचाया जा सके।

'सोच बदलो हालात बदलेगी'

एम. रामास्वामी, सहायक लेखा अधिकारी

जैसे-जैसे शाम की किरणें ढ़लती हैं
कर्णभेरी की धुन के साथ अंधकार छा जाता है
क्या आपने कभी बातों की जुगाली के विषय में सोचा है ?
अपनी अक्लमंदी पर नाज करने के लिए !!

क्या आपने एक भी आत्मा की मदद की
क्या आपने प्रशंसा का एक शब्द साझा किया है
क्या आप किसी की मुस्कान की वजह बने ?
क्या आपके कार्य निष्कपट हैं !!

जब आपकी आंखें उनींदी हों
तो क्या आप झुकी हुई पलकों से लड़ते हैं
क्या आपने अपने मन को आवाज़ दी ?
कि आज मैंने निश्चिंत होकर झपकी ली हैं !!

जैसा कि आप नई सुबह का अभिनंदन करते हैं
अपने दिमाग को अतीत से दूर ले जाएं
क्या आपने कभी अपना भविष्य जानना चाहा ?
भविष्य अज्ञात है तो जानने के पचड़े में न पड़े !!

हर तूफान को वर्तमान से गुजरना पड़ता है
बरसात के बादलों को दूर जाना पड़ता है
यात्री आते-जाते हैं पर क्या कभी रास्ते बदलेंगे ?
जिंदगी के खुबसूरत सफर में रास्ते बदलते ही मुकाम बदलते हैं !!

गाँव की कहानी

राजीव कुमार, डीईओ

आओ आज तुम्हें सुनाँउ गाँव की कहानी
यहाँ कुछ इंसान मिलेंगे गरीब और लाचारी
फिर भी इनके मुख से निकले मीठी वाणी
आओ आज तुम्हें सुनाँउ गाँव की कहानी।

खेतों में किसान मिलेंगे
पेड़ों के नीचे छाँव मिलेंगे
नदियों में है बहता पानी
आओ आज तुम्हें सुनाँउ गाँव की कहानी।

बहुत घुमे हो शहरों में एक बार आओ मेरे गाँव
शहर से अच्छा लगेगा जब रखेंगे यहाँ पाँव
चारों तरफ छायी है, खेतों का ना सानी
आओ आज तुम्हें सुनाँउ गाँव की कहानी।

संस्कार मिलेंगे, ऊँचे विचार मिलेंगे
मिलेगी दादा पोती की नादानी
ज्यूं मिले प्यासी आँखों को पानी
आओ आज तुम्हें सुनाँउ गाँव की कहानी।

'अबके जन्म मोही फिर तू ही मिलियो'

एस. कल्याणी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मेरा दफ्तर है मेरा परिवार
बहुत गर्व है इस सौभाग्य पर
इसका हिस्सा बनकर भी पदानुक्रम के आडंबर से परे हैं
है मनमोहक हरियाली से हरा-भरा
शहर के हृदय का ये दृश्य, देवदुर्लभ शांति से आच्छद
प्रयास किया इसे शब्दों में बाँधू
आपद काले यहाँ ऋण भी मिलता
मिलता सब उचित मूल्य पर सहकार भवन से
एक समान हिंदु मुस्लिम और ईसाइयत का पूजाघर
संदेश प्रेषण और बचत को बना है एक डाकखाना
स्वस्थ और घर का सा भोजन परोसती है पाकशाला
एकल परिवार के छोटे शिशुओं का सहारा बनता इसका बालघर
स्वस्थ रहने को वर्जिस लेने जाओ बना है जिमख़ाना
ज्ञान पिपासा शांत करने को बना रखा पोथीखाना
साथी सखा सब सहयोग को तत्पर
धरा पर स्वर्ग सा लगता मुझको ये दफ्तर
हे प्रभु! ये कृपा बरसाई
मैं कृतज्ञता कहूँ कैसे!
सपन संजोऊँ कँरू कामना
अबके जन्म मोही फिर तूँ ही मिलियो।।

कुछ शायरी, कुछ नज्में

संजय कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

और यह मान कर चल कि फ़क़त उड़ता हुआ परिंदा हूँ मैं
'पार करने हैं मुझे समंदर सारे' ये दिल में आए वो अरमान हूँ मैं
याद कर जिंदगी-ए-सफर तेरा, तेरी हर खुशी की उड़ान हूँ मैं
बुझबुझ कर फड़कती सी शमा सा, तेरी यादों में आज भी ज़िंदा हूँ मैं।

और यूँ तो ताल्लुकों से जड़ा हुआ हूँ मैं ज़माने के आदाब में
लेकिन आज भी तेरी उन, टेढ़ी मेढ़ी गलियों का बाशिंदा हूँ मैं
मुझसे और ना करवा 'कुफ्र' अब, के देखने हैं मुझे जन्नत सारे
न आजमा मुझे यकीन कर, के जिसने बनाई ये कायनात उसी अल्लाह पाक का कारिंदा हूँ मैं
गैरों के आगे बड़ा खुश पर तेरे आगे बेहद शर्मिंदा हूँ मैं

मैंने अपने घर में तुम्हारा सामान सजा रखा है
कभी तो आओगे मेरे घर में यह अरमान सजा रखा है
और यूँ तो मिल जाते हो तुम मुझे रह में हरदिन
रास्ता भी क्या मैंने आसान सजा रखा है?
मुझे ना काफिरों का ग़म है ना रकीबों की फ़िकर
अपने जिए के कोने में मैंने एक 'मेहमान' सज़ाके रखा है।

हौसला इस बात का था कि तुम ही तुम मेरी बाहों में थी
आलिंगन था, क्योंकि तुम मेरी पनाहों में थी
क्या खबर था कि मुझे दिल-ए-आशिकी का ये सबब मिलेगा
राह बदली तुमने अपनी और अब तुम रक़ीब की राहों पर थी
हौसलों से अब जहाँ में आशिकी टिकती नहीं
ये देख अल्लाह ने दी ये हिम्मत कि नज़र मेरी झुकती नहीं
खूबसूरती इस बात की है इस खुदगर्ज में
कुछ चीज़ें ऐसी भी हैं जो दौलत से बिकती नहीं।

ज़ुल्फ़ लहराई तेरी इस तरह की दिन में अँधेरा हो गया
आँख मिली हमारी कुछ इस तरह कि तूँ मेरा हो गया
और यूँ तो दिल में थे अरमान की हासिल करने हैं कई मकाम
मगर अब लगता है दिल पर किसी अज़नबी का बसेरा हो गया
और आपको देखते देखते गुज़र गयी वह खूबसूरत रात
आँख भी ना लगी और खबर ही न हुई कि कब सवेरा हो गया।

बीती परछाइयों को खोजते खोजते शाम हो गयी
अब तो ऐसा लगता है की यह बात सरेआम हो गयी
और दरख्तों से टूटते रहे पत्ते रातभर
आप ना लौटे मगर, हमारी गली बदनाम हो गयी
जिन इलाकों में घूमा था मैं पकड़कर तेरा दामन
वह इलाके मोहब्बत ऐ निशान हो गईं
और आपने बसा लिया आशियाँ आपको मिल गया रकीब
हमारे मोहब्बत की दुनिया वीरान हो गयी।

जान कहकर तुम हाय तौबा मेरी 'जान' लेती हो
मर ही जाता हूँ मैं उस पल जब तुम अपनी ज़ुल्फ़ेंझटक देती हो
इठलाना, शर्माना शोख अदाएं सीखीं हैं तुमसे सब हसीनाओं ने
तुम तो वह हो जो ज़न्नत की 'हूर' को भी नज़ाकत सीखा देती हो
तेरे दरवाज़े पर आ खड़ा हूँ मैं ज़ालिम सिर्फ इस आस में
देखना है कि क्या हम 'काफिरों' को भी तुम ईमान का पैग़ाम देती हो।

देश की बदहाली पर अच्छे दिन दिखाऊं कैसे??
भूखे पेट सोते बच्चों को आज़ादी के किस्से सुनाऊँ कैसे?
और जिन घरों में अब 'माँ' की जगह है पत्नियों का शासन,
उन घरों में गोपाल संग माँ 'यशोदा' की तस्वीर लगाऊं कैसे??
और जब देश जलता है हिन्दू मुसलमान के दंगो में,
तब देश में कौमी एकता के तराने गाउँ कैसे??
और जिन्होंने ठगा है देश को करके चुनावों में वादा,
उनके गिरेबान पकड़कर 'अदालतों' तक ले जाऊं कैसे??

'अमन और आतंक'

'आतंक का साया'

टी.एन. तिरुपुरसुंदरी, स. लेखाधिकारी

क्यों है आतंक का डेरा यहाँ
ये काश हम समझ पाते!
है निशाना कहाँ और नजरें कहाँ
ये काश हम समझ पाते!

क्यों है इनका बैर उनसे
जो अमन की बात करते यहाँ
क्यों इनका निशाना हैं वही बनते
जो इंसानियत की खिदमत करते!

बुराई जिन्हें बर्दाश्त नहीं
क्यों उन्हीं का लहू बहाते ये
जिसकी इक-इक बूंद मोती सी
क्यों उन्हीं का लहू बहाते ये!

हत्या आतंक इनके मखौल
क्यों इक मारो तो दूजा बहाल
रक्त बीजी बन रहे हैं क्यूँ
कैसे रुके ये कत्ले-आम!

भलाई पस्त हुई बुराई मस्त
ये करतब इंसानियत पर आफत
रोको बेरहमी तबाही की मंजर
अमन चल न पड़े आतंक डगर!

'अमन की ताकत'

लक्ष्मी जी, स. लेखाधिकारी

हरपल है इंतजार और बेहतरीन जिन्दगी का।
हर दिन हैं सपने, आने वाले सुनहरी कल का॥
न जानूँ कहाँ पहुँचे हैं अब तक न जाने कहाँ...

फिर भी हमेशा रहती है अभिलाषा।
और बेहतरी की और कामयाबी की॥
भागदौड़ में अब तक निकल गई है, जिंदगी जाने जहाँ...

पर अब जो दुनिया थम रही है, धीमी धीमी चल रही है।
सोचती हूँ जिन्दगी तो अनमोल सफर है॥
पर तुझे जाना किधर है? न जाने कहाँ...

मुड़के देख जरा, कितने आए और साथ चले।
कुछ दूर डगर तक साथ चले और छूट गए बीच सफर में॥
कितने आए साथी-कर्मी-रिश्ते-नाते, जाने कितने...

कुछ थे जो दिल को छू गए।
कुछ थे जो दुनिया बदल गए
जिन्दगी की रफ्तार में न जाने वो गुम हुए कहाँ...

जिन्दगी है अनमोल सफर पर आज है जो दुनिया डरी-डरी।
आतंक की तबाही से बीमारी की लाचारी से पर॥
'अमन की ताकत' से, हैं रुके कितने हैं झुके कितने...

ऑलंपिक्स की खुशियाँ

कल्याणी पल्लवेश, स. लेखाधिकारी

इस साल की तेबीस जुलाई
ऑलिंपिक्स की खुशियाँ लाई
टोक्यो में भारतीय खिलाड़ियों का मेला भरवाया
कोई हारा कोई जीता.....प्रतिद्वंदी को मायूस करवाया

मीराबाई चानू ने दिखाई ऐसी झलक
ले आयी चाँदी का पदक,
पी वी सिंधू ने कठिनाईयों को झेला
जीती पीतल का पदक.....उसने जमकर खेला

शानदार प्रदर्शन पर मैरी कॉम उदास
कोई पदक न आया उसके पास
लवलीना पहली बार शामिल हुआ ऑलिंपिक्स में
पीतल पदक जीतकर.....गाँव का नाम किया भारत में

हॉकी में अपने लड़कों ने खूब जोश दिखाया
41 सालों के बाद कांस्य पदक भारत आया
रवि दहिया ने की जमकर कुश्ती
मिला चाँदी पदक.....खुशी से झूम उठी उसके गाँव की बस्ती

महिला हॉकी ने हरा डाला
तो सोना लाया नीरज का भाला
खेल-खेल में सिद्ध हुए जंगी
जब पीतल जीत लाए बजरंगी

खिलाड़ियों ने पूरा किया पदक लाने का वादा
गिनती और बढ़ेगी ऐसा इनका मजबूत
आशा है पदक और बढ़ेंगे।
ऑलंपिक 2024 का भी इंतजार करेंगे

कोरोना-काव्य

फटकार

के. संकरन, स. लेखाधिकारी

कोरोना से पहले, कोरोना के बाद,
कभी कभी मेरे दिल में खियाल आता हैं
अगर ये लॉकडाउन न होता तो क्या होता ?
पहले, पत्नी के हाथों से बनी चाय
अब, अपने हाथों के बनी दो कप चाय
(एक कप - पत्नी के लिए)

पहले, दफ्तर के लिए बस के पीछे भागना
अब, चलना ही भूल गया
पहले, दस मिनट चाय ब्रेक में बॉस की चुगली करना
अब, घर पर देवी जी की हाँ में हाँ मिलाना
पहले, बच्चों के साथ खेलने का वक्त नहीं था
अब, पता नहीं बच्चें कब विद्यालय जाएंगे

पहले, लगता था ये रिश्तेदार कब जाएंगे
अब, लगता हैं कि वे कब आएंगे
पहले, अपने स्वास्थ के प्रति ध्यान न था
अब, स्वास्थ पर ही ध्यान देते रहना
पहले, हाथ मुंह धोने की सीख लगती थी हंसी-ठट्ठा
अब, हाथ मिलाने से डरके करते हैं नमस्ते

पहले, घर आकर कपड़े बदलना लगती थी नादानी,
अब, मास्क बदलने में भी सावधानी
सब कुछ समझा गया कोरोना एक ही फटकार में।

महामारी

अनिल कुमार, डी.ई.ओ

कोरोना महामारी ने कैसी आफत लाई है
जिस ओर भी देखो तबाही मचाई है
हर घर में मातम सा छाया है
सब जगह पर कोरोना का ही साया है।

अस्पतालों में बिस्तर और ऑक्सिजन की कमी ने
ना जाने कितने लोगों को कफन में सुलाया है
ना जाने यह कैसी महामारी आई है
जो लोगों के दिलों में दूरियाँ लाई है।

कितनी नकारात्मकता फैली है सारे संसार में।
हताशा ही नजर आती है सबके व्यवहार में
कोरोना ने सबका वक्त ही बदल दिया है
कितने लोगों को नौकरी और
कितने ही लोगों को जिंदगी से दूर कर दिया है।

बच्चों का जैसे बचपन ही छीन लिया है,
पार्क-झूले का स्थान मोबाइल व टीवी ने ले लिया
खिड़कियों से झाँकते है मासूम से बच्चे, नादान है
नहीं जानते बाहर कितना खौफ छाया है।

बस अब जल्दी से सब ठीक हो जाए
कोरोना महामारी इस दुनिया से चली जाए
विश्वास है सब जल्दी से संवर जाएगा
वातावरण में सकारात्मकता का रस छा जाएगा।

स्वास्थ्य ही धन

आर शांति, व. लेखा अधिकारी

महात्मा गाँधी ने कहा है कि आपका स्वास्थ्य ही आपका धन है। स्वास्थ्य शरीर और मन दोनों को जोड़ने वाला सेतु है। दोनों ही को स्वस्थ रखना उज्ज्वल भविष्य के लिए जरूरी है। गाँधी जी की बात शत प्रतिशत सही है कि स्वस्थ्य हमारी दौलत है क्योंकि इसके बिना हम संसार का आनंद लेना संभव नहीं है। एक इटालियन कहावत है कि "वह जो अच्छे स्वास्थय का आनंद लेता है वह धनी है, हालांकि यह वह जानता नहीं है।" शरीर कों स्वस्थ बनाए रखने के लिए हमें नियमित व्यायाम, योग और प्रातः भ्रमण के साथ हल्का-फुल्का दौड़ लगाना चाहिए। इससे हमारा हृदय स्वस्थ रहेगा और डाइबिटीज़ आदि रोग भी नहीं होंगे।

केवल कमाई के पीछे भागते रहना और शरीर का ध्यान नहीं रखना बुद्धिमानी नहीं है। स्वस्थ्य की कीमत तब समझ में आने लगती है जब हमारा स्वास्थ्य कमजोर पड़ने लगता है। पश्चिमी विद्वान रिचर्ड बेकर कहता है कि अमीर बनने के लिए कभी अपने स्वास्थ को जोखिम में नयी डालना चाहिए क्योंकि स्वास्थ्य ही धन से बड़ा धन है। स्वस्थ्य हमारे जीवन का अमूल्य तोहफा है। हमें चाहिए की हम आज भागती दौड़ती जिंदगी में अपने शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखे, क्योकि आज हमारे देश में जिस गति से सभी तरह का प्रदुषण बढ़ रहा है उसी गति से हमारे वातावरण में अनेकों प्रकार की डीजीज भी बढ़ने लगी है। जिसने हमें खुद को बचाने की आवश्यकता है। हमें अपने खान आन की आदतों और संतुलित आहार लेने पर ध्यान देना चाहिए। सही मायनों में कहा जाए तो जिस व्यक्ति के पास अच्छा स्वास्थ्य है, वही आज के समय में संपन्न और धनि व्यक्ति है।

आपके अभिमत

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) -द्वितीय,
मध्य प्रदेश, लेखा भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर- 474002

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका अमृत के 29वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पृष्ठ, रुपसज्जा एवं छायाचित्र सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषत: सुश्री एस कल्याणी की कविता लॉकडाउन का अनुभव तथा अनिल कुमार की कविता पेड़ की पीड़ा सराहनीय एवं उत्कृष्ट हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होंगे।
पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

एनपीसीआईएल, कैगा स्थल,
न्यूक्लियर पावर कॉपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, मानव संसाधन- राजभाषा

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका अमृत का 29वाँ अंक प्राप्त हुआ, जो सराहनीय है। पत्रिका में सुभाषचंद यादव ने भीष्म वध पांडवों का क्रुरतम पक्ष रचना द्वारा पांडवों के वास्तविक रुप को उजागर करने का प्रयास किया है। इस अंक में लॉकडाउन से संबंधी लेख प्रासंगिक है। संजय कुमार सिंह की चल उड़ जा रे पंछी लेख यथार्थ के करीब है। इस अंक में कुल 10 कविताएं हैं, जो अपने आप में अनूठी है। पत्रिका की रुपसज्जा एवं छायाचित्र अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई-

सुधीर कुमार पोखरना, उपप्रबंधक (राजभाषा)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका अमृत का 29वाँ अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्द्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ हमारे विचार से प्रशंसनीय हैं। इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-दीपक कुमार दास, वलेप अधिकारी

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बैंगलोर

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका अमृत के 29वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। श्री संतोष कुमार की कविता कोविड-19 में मजदूर की वेदना, श्रीमती उषा रघुनंदन का लेख वर्क फ्रॉम होम के फायदे एवं नुकसान, सुश्री पूनम चोपड़ा का लेख विकास-प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के खात्मे की कीमत पर आदि रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (लेप), बिहार, वीरचंद पटेल मार्ग, पटना-800001

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "अमृत" के 29वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई सहर्ष बधाई और धन्यवाद। इस अंक में स्तरीय और पठनीय रचनाओं के साथ-साथ कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित सुंदर छायाचित्रों को भी संकलित किया गया है। इस अंक में संकलित आलेख "विकास: प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के खात्मे की कीमत पर" और "2020 का चक्रवाती तूफान: निवार", "भविष्य की दुनिया" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अहिन्दी भाषी प्रदेश में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार, विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में "अमृत" पत्रिका की भूमिका दिनानुदिन सशक्त हो रही है। इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पुनः समस्त पत्रिका परिवार को बधाई- *वलेप अधिकारी (हिन्दी)*

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह) -I, उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद-211001

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका "अमृत" के 29वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र एवं काफी अच्छे लगे। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्रीमती आर शांति का लेख "दादा-दादी की अहमियत", श्रीमती जुलियट विमला बीका लेख "तिगलक्ष्मी श्रीधरन- एक अद्भुत रंगोलीकार", श्रीमती एस कल्याणी की कविता "लॉकडाउन का अनुभव", श्री अनिल कुमार की कविता "पेड़ की पीड़ा" एवं श्री संजय कुमार का लेख "चल उड़ जा रे पंछी" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है- *वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)*

कार्यालय महालेखाकार(ले व ह), श्रीनगर, जम्मू कश्मीर-190009

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "अमृत" के 29वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं- *वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)*

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय, भारत सरकार, दिल्ली छावनी-110010

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "अमृत" के 29वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए धन्यवाद। "अमृत" के इस अंक में गुणवत्ता पूर्ण लेखन सामग्री शामिल है जिसने संपादक मंडल के सटीक चयन और विषय वस्तु तथा शैली के आलोक में पत्रिका के स्तर को काफी ऊँचा कर दिया है। "भीष्म- वध पांडवों का कूरतम पक्ष", एवं "दादा-दादी की अहमियत "लॉकडाउन का अनुभव", "अब वापस न आएंगे" कविताएं भी सराहनीय रहे। आपके प्रयासों के लिए साधुवाद- *सहायक निदेशक राजभाषा*

प्रधान कार्यालय महालेखाकार(ले व ह), आंध्रप्रदेश, हैदराबाद- 500004

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "अमृत" के 29वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे है तथा इसमें समाहित रचनाएं ज्ञानवर्धक है। विशेषत: श्रीमती आर शांति का लेख "दादा-दादी की अहमियत", श्री संतोष कुमार की "अब वापस न आएंगे", श्री अनिल कुमार की "पेड़ की पीड़ा", जी लक्ष्मी की "बंधन", श्रीमती एम प्रेमलता की "रागी के स्वादिष्ट लड्डू कैसे बनाएँ" अति सराहनीय है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं- *व.लेखाधिकारी (प्र)*

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता-700020

आपके कार्यालय से हिन्दी गृह पत्रिका "अमृत" की एक प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में अंतनिर्हित सभी रचनाएँ अव्यं अत्यंत सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। ये सभी रचनाएं अत्यंत रूचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन और उज्ज्वल भविष्य हेतु बहुत-बहुत शुभकामनाएं- *वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा)*

प्रधान कार्यालय महालेखाकार(ले व ह), बिहार, पटना

आपके कार्यालय से हिन्दी गृह पत्रिका 29 वें "अमृत" की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का विवरण एवं साज सज्जा सुंदर और लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री अनिल कुमार की "पेड़ की पीड़ा", सुश्री एस कल्याणी की कविता "लॉकडाउन का अनुभव " एवं श्री शशिकांत कुमार की रचना "2020 का चक्रवाती तूफान: निवार" काफी रोचक सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु सम्पादक मण्डल बधाई के पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामनाएं- *वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)*

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) मुंबई, का कार्यालय, बांद्रा मुंबई-400051

आपके कार्यालय से हिन्दी गृह पत्रिका 29 वें "अमृत" की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का कवर- पृष्ठ बहुत ही संदुर है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं एक से एक बढ़कर है। इन में से कुछ रचनाएं ऐसी है जो कि बहुत ही रोचक एंव ज्ञानवर्धक है। जैसे कि श्रीमती आर शांति की "दादा-दादी की अहमियत", श्री एम राधा कृष्णमूर्ति की “भविष्य की दुनिया”, श्री मुकेश कुमार की देख तेरे संसार की हालत क्या हो गयी भगवान, सुश्री पूनम चोपड़ा की "विकास- प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के खात्मे की कीमत पर" एवं सुभाषचंद यादव की "भीष्म- वध पांडवों का क्रूरतम पक्ष" जैसे रचनाएं उल्लेखनीय हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी शुभकामनाएं- *वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)*

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय

आपके कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका अमृत का 29वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ विशेष रुप से श्री सुभाष चंद यादव (हिंदी अधिकारी) की “भीष्म वध” पांडवों का क्रूरतम पक्ष.... , श्रीमती आर शांति (व.लेखा अधिकारी) की “दादा दादी की अहमियत”, सुश्री पूनम चोपड़ा (व.अनुवादक) की विकास “प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के खात्मे की कीमत पर” आदि सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ *हिंदी अधिकारी*

हिंदी पखवाड़ा 2021 का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते हुए महालेखाकार महोदय

हिंदी पखवाड़ा 2021: क्विज स्पर्धा के सहयोगियों का एक सामूहिक चित्र

हिंदी पखवाड़ा 2021 के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए महालेखाकार महोदय

12 फरवरी 2021 को सीएजी ऑफिस द्वारा ऑनलाइन निरीक्षण के दौरान बातचीत करते हुए हिंदी अधिकारी